

इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक १ मार्च, २०१५ को होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएँगे । अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें ।

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था
सत्संग शिक्षण परीक्षा

पूर्व कसौटी : सत्संग प्रवीण : प्रश्नपत्र - १

जनवरी, २०१५

समय : सुबह ९.०० से १२.००

कुल गुणांक : १००



अनुपस्थित परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका का केवल यही पृष्ठ वापस भेजना है ।

परीक्षार्थी के नाम सम्बंधित विवरण के साथ 'बारकोड' अंकित किया गया है । कृपया उस पर किसी प्रकार का नुकसान मत कीजिए ।

अनिवार्य : निम्न लिखित सूचना की परीक्षार्थी को अपने आप पूर्ति करनी है

बिना वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर की उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।

परीक्षार्थी का जन्म दिन दिनांक महिना वर्ष

परीक्षार्थी का अभ्यास

परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका पर अंकित नाम सहित अनिवार्य विवरण की सत्यता की जाँच करने के पश्चात् वर्ग निरीक्षक हस्ताक्षर करें ।

वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर

पीछे दी गई सूचनाओं का अवश्य पालन करें ।

परीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षक की नोंध :-

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१ (६)	
	२ (५)	
	३ (४)	
	४ (४)	
	५ (८)	
	६ (८)	
	७ (७)	
	८ (५)	

विभाग-१, कुल गुण (४७)

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	९ (९)	
	१० (८)	
	११ (८)	
	१२ (५)	
	१३ (८)	

विभाग-२, कुल गुण (३८)

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१४ (१५)	

विभाग-३, कुल गुण

मोडरेशन विभाग भाटे ४

गुण आंकडामां

शब्दोमां

चेकरनुं नाम

परीक्षार्थियों को महत्वपूर्ण सूचनाएँ

१. परीक्षार्थी सत्संग प्रारंभ से प्राज्ञ - ३ तक की क्रमशः हर परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही अगली परीक्षा दे सकते हैं ।
२. सत्संग शिक्षण परीक्षा के मुख्य दिन परीक्षार्थी के नामलिखित मुख्य पृष्ठ परीक्षा कार्यालय द्वारा प्रिन्ट करके भेजा जाता है । उसके अनुसार ही परीक्षार्थी को परीक्षा की श्रेणी (प्रारंभ, प्रवेश, परिचय आदि...) एवं माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) में परीक्षा देनी होगी । इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करके दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।
३. परीक्षार्थी को पूर्वकसौटी के प्रश्नपत्र की श्रेणी (प्रारंभ, परिचय, प्राज्ञ-१, केवल प्रथम.....) एवं परीक्षा के माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) अनुसार ही मुख्य परीक्षा देनी होगी । पूर्वकसौटी की जानकारी के अनुसार परीक्षा केन्द्र के मुख्य परीक्षा कार्यकर्ता को अंतिमसूची (Final List) भेजी जाती है, उसके अनुसार ही मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा देनी होगी । अंतिमसूची से अलग दिये गए विवरणवाली परीक्षा रद्द मानी जाएगी और ऐसी उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।
४. मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा खंड में उपस्थित हर एक परीक्षार्थी अपनी नामलिखित उत्तर पुस्तिका लेकर तथा उसमें मांगा गया अन्य विवरण (जन्म दिनांक, शिक्षा) लिखकर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर अवश्य करवा लें । वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर बिना लिखी गई उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।
५. परीक्षार्थी केवल ब्लू या काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखें । पेन्सिल अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से लिखी गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।
६. सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा न जा सके, ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावटवाली उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।
७. परीक्षा खंड के बाहर अथवा अन्य सभी परीक्षार्थियों से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।
८. सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व अनुमति के बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'स्थानापन्न' या 'सबस्टीट्यूट राइटर' अथवा 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका रद्द मानी जाएगी ।
९. सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद को पूर्व अवगत किए बिना, रजिस्टर्ड परीक्षा केन्द्र के बदले में अन्य परीक्षा केन्द्र से दी गई परीक्षा रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।
१०. सत्संग प्रवेश, परिचय, प्रवीण एवं सत्संग प्राज्ञ (प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्रों में रजिस्टर्ड हुए) के लिए परीक्षार्थियों को दोनों प्रश्नपत्रों की परीक्षा देनी अनिवार्य है । किसी भी एक ही प्रश्नपत्र की दी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।
११. मुख्य परीक्षा के दिन उत्तर पुस्तिका के अलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखे हुए उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।
१२. परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।
१३. प्राज्ञ की परीक्षा का फॉर्म भरने से पहले निम्नलिखित मुद्दे ध्यान में रखें ।
 - परीक्षार्थी एक ही साल में दोनो प्रश्नपत्र दे सकता है । अथवा पहले साल में पहला प्रश्नपत्र और दूसरे साल में दूसरा प्रश्नपत्र दे सकता है । पहले प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण (पास) होने के बाद ही दूसरा प्रश्नपत्र दिया जा सकता है । प्राज्ञ परीक्षा में केवल प्रथम प्रश्नपत्र या दूसरा प्रश्नपत्र देनेवाले को उत्तीर्ण होने के लिए उस प्रश्नपत्र में ४५ अंक प्राप्त करना आवश्यक है ।
 - जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनो प्रश्नपत्र में रजिस्ट्रेशन कराया हो और यदि वह परीक्षार्थी किसी एक प्रश्नपत्र में ही उपस्थित रहता है और दूसरे प्रश्नपत्र में अनुपस्थित रहता है, तो एक प्रश्नपत्र की दी गई उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा । जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र दिए हों, उसे उत्तीर्ण होने के लिए ९० अंक प्राप्त करने होंगे ।
 - प्राज्ञ परीक्षा देने वाले सभी परीक्षार्थी कृपया ध्यान रखें कि जो परीक्षार्थी अलग-अलग साल में प्रश्नपत्र प्रथम और प्रश्नपत्र दूसरा देते हैं, उनको प्रथम प्रश्नपत्र ४५ या उससे ज्यादा अंक से उत्तीर्ण करने के बाद दूसरा प्रश्नपत्र ज्यादा से ज्यादा एक ही साल के विराम के बाद देना होगा । एक से ज्यादा साल की अनुपस्थिति के बाद दिया हुआ दूसरा प्रश्नपत्र स्वीकृत नहीं होगा । ऐसे परीक्षार्थी को पुनः प्राज्ञ का प्रथम प्रश्नपत्र अथवा दोनों प्रश्नपत्र देने होंगे ।
 - प्राज्ञ परीक्षा के पारितोषिक विजेता की सूची में आनेवाले परीक्षार्थी में से जिन्होंने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र एक साथ एक ही साल में दिया हो, उनको १० प्रतिशत (फिसदी) अंक पुरस्कार के रूप में दिए जाएंगे और इस तरह परीक्षार्थी पुरस्कार के योग्य माना जाएगा ।
 - नोंध : जिस परीक्षार्थी ने भारत की प्रवीण परीक्षा उत्तीर्ण की हो, ऐसे ही परीक्षार्थी प्राज्ञ-१ परीक्षा दे सकते हैं ।
१४. अवैद्य रजिस्ट्रेशन !!! परिणाम नहीं मिलेगा !!!

प्र. १ निम्नलिखित किन्हीं दो विषय के संदर्भ में शास्त्र के तीन प्रमाण दीजिए ।

(संदर्भ शास्त्र का नाम और क्रमांक लिखना अनिवार्य है ।)

[६]

१. प्रकट का अर्थ क्या है ? किस रीति से प्रकट हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

२. श्रीजीमहाराज सर्वकर्ता-हर्ता हैं ।

३. भगवान साकार कैसे हैं ?

४. गुणातीत संत के लक्षण ।

प्र. २ प्रमाण, सिद्धांत अथवा पंक्ति पर से विषय का शीर्षक दीजिए ।

[५]

उदाहरण : “भगवान को निराकार समझने के रूप में किया गया पाप तो पंचमहापापों की अपेक्षा भी बहुत बड़ा पाप है ।

इस पाप का कोई भी प्रायश्चित्त नहीं है ।”

उत्तर : भगवान को निराकार समझने से हानि ।

१. “यह तो परदेशी साधु है ।”

.....

२. “कोई भी परब्रह्म के समान भी नहीं हो सकता या उससे अधिक भी नहीं हो सकता ।”

३. “आपको गुरु होने की इच्छा नहीं है फिर भी लोग आपको गुरु बनाएँगे ।”

४. “ऐसी निष्ठावाले संत की चरण-रज को हम भी सिर पर चढ़ाते हैं ।”

५. “हम नहीं तो हम जैसा रखेंगे ।”

प्र. ३ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । [४]

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहि दिया जाएगा ।

१. प्रकट भक्ति की महिमा ।

(१) ☐ प्रगट स्वरूप उपासी, धन्य सो प्रगट स्वरूप उपासी ।

(२) ☐ प्रकटना भजनथी परम सुख पामीए ।

(३) ☐ प्रकट ने भजी भजी पार पाम्यां घणां, गीध, गणिका, कपिवृंद कोटि ।

(४) ☐ प्रकट भगवान हैं, प्रकट बातें हैं, परन्तु अन्यत्र तो चित्रित किए हुए सूर्य हैं ।

२. अक्षरब्रह्म किन किन रूप में कार्य करते हैं ?

(१) ☐ परब्रह्म के अंतर्धामी स्वरूप में ।

(२) ☐ सच्चिदानंद चिदाकाश तेजरूप ।

(३) ☐ मनुष्य देहधारी ।

(४) ☐ साकार, मूर्तिमान, सदा दिव्यविग्रह ।

१. बापू रतनजी जूनागढ़ में ।
२. छोकरे, भगवान की तुलना न कर ।
३. गुणातीतानंद स्वामीने तीसरा फूल अचिन्त्यानंद ब्रह्मचारी को दिया ।

[illegible]

सिद्धांत:

[4]

१. ब्रह्म को परब्रह्म लीन करते हैं, इसका क्या अर्थ है ?
२. प्रकट भगवान या भगवान के संत द्वारा मोक्ष ।
३. अक्षरब्रह्म की अनंत महिमा ।
४. महापुरुषों में दोषों को देखने से हानि ।

[illegible]

[4]

- [illegible]

(उपासना में क्या समझना चाहिए ?)

- सेवक के रूप में रहता है ।

२. मुक्ति अवस्था में जीवात्मा सर्वोपरिता हमेशा रहती है ।
३. ऐसे प्रकट ब्रह्मस्वरूप अधिकारी बन जाता है ।
४. श्रीजीमहाराज पूर्ण पुरुषोत्तम प्रकट और दिव्य हैं ।

(उपासना में क्या नहीं समझना चाहिए ?)

५. वचनामृतादि सत्शास्त्रों सकता हैं, ऐसा नहीं समझना चाहिए ।
६. मुक्तों की आत्मा ऐसा नहीं समझना चाहिए ।
७. अकेले पुरुषोत्तम नहीं है, ऐसा नहीं समझना चाहिए ।

[illegible]

विभाग - २ : सत्संग वाचनमाला भाग ३ - प्रथम संस्करण, नवम्बर - २००२
और युगविभूति प्रमुखस्वामी महाराज - द्वितीय संस्करण, जून - २००७

प्र. ९ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए ।

[୧]

१. “अपने घर पर आप इस तरह अनाज को बिगाड़ते रहते हो क्या !” अथवा
२. “यदि उसको पश्चात्ताप ही हुआ है, तो प्रायश्चित्त देकर उसे सत्संग में प्रवेश दे देना चाहिए ।”

() कौन कहता है ? किसको कहता है ?

कब कहता है ?

.....

.....

३. “बड़े एकांतिक संत तो गाय के थन की जगह है ।” **अथवा**
४. “बोचासण नहीं जाना है ?”
५. “इतनी सेवा करते जाओ ।” **अथवा**
६. “आज ही नए बोटल में भरा है ।”

[illegible]

[4]

[illegible]

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

३. करुणा का मानो चैतन्य प्रपात । अथवा ४. डेविड का दिव्य अनुभव ।

प्र. १२ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए ।

[५]

१. श्रीहरि ने शेखपाट में कौन-सा उत्सव मनाया ?

.....

.....

२. मुकुन्ददास की स्वाभाविक रुचि एवं प्रवीणता किस में थी ?

३. श्रीजीमहाराज कई बार पर्वतभाई की प्रशंसा करते हुए क्या कहते थे ?

४. कौन-सी दो पार्लामेन्ट में प्रमुखस्वामी महाराज का सम्मान हुआ है ?

५. स्वामी चिदानंदजी के कथन के अनुसार क्या देखना दुर्लभ है ?

प्र. १३ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । [८]

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहि दिया जाएगा ।

१. गोपालानन्द स्वामी ने किन किन को गुणातीतानन्द स्वामी की महिमा समझाई ?

(१) ☐ प्रागजी भक्त ।

(२) ☐ जागा भक्त ।

(३) ☐ केशवजीवनदास ।

(४) ☐ शिवलालभाई सेठ ।

२. पर्वतभाई की मानसी पूजा ।

(१) ☐ मानसी में दही और बाटी खिलाते थे ।

(२) ☐ महाराज यह भोजन अंगीकार कर रहे थे ।

(३) ☐ मेरा तो नियम है ।

(४) ☐ पहले मेरे इष्टदेव भोजन ग्रहण करेंगे तब मैं कर सकता हूँ ।

३. शरीररूप मन्दिर के शृंगार कौन से है ?

(१) ☐ संतोष ।

(२) ☐ बाहर से साफ़ ।

(३) ☐ दया ।

(४) ☐ शील ।

४. जिन्होंने प्रमुखस्वामी की प्रशंसा की है ।

(१) ☐ नानी पालखीवाला ।

(२) ☐ आत्मानन्दजी स्वामी ।

(३) ☐ महात्मा गांधी ।

(४) ☐ राष्ट्रप्रमुख बुश ।

विभाग - ३ : निबंध

प्र. १४ निम्नलिखित किसी एक विषय पर करीब ६० पंक्ति में निबंध लिखिए ।

[१५]

१. तेजस्वी शुक्रतारक : श्री मगनभाई पटेल (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती), सितम्बर २०१३, पा.नं. ३० से ३५)

२. मन्दिर महोत्सव : रोबिन्सविल मन्दिर ।

(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती), अक्टूबर २०१४, पा.नं. ३१ से ४९)

३. वीरान में महक उठी हरियाली : रंभास निम्न छात्रों की आश्रम पाठशाला ।

(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती), जुलै २०१४, पा. नं. ६ से ११, २३)

()

.....

.....

✍ आगे के पृष्ठों में उपरोक्त तीन निबंध (गुजराती भाषा में) दर्शाए गए हैं ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....



✍ अगत्य की सूचना : सभी परीक्षार्थी अपनी संस्था की निम्नलिखित website - link पर से पुराने सालों के प्रश्नपत्र और उसके उकेलपत्र निःशुल्क डाउनलोड कर सकते हैं और उसकी प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं ।

<http://www.baps.org/Satsang-Exams.aspx>

આગામી વર્ષે ૧ માર્ચ, ૨૦૧૫ના રોજ લેવાનાર મુખ્ય પરીક્ષાની પૂર્વતૈયારી માટે મુકાતા પ્રી-ટેસ્ટના સંપૂર્ણ પ્રશ્નપત્રો હંમેશ મુજબ જાન્યુઆરીમાં (1st January, 2015ના રોજ) મુકાશે. નિબંધ એ સામાન્ય જ્ઞાન સહિત મુક્ત વિષય હોય છે, જે અભ્યાસક્રમના પુસ્તકોમાંથી પૂછાતા નથી. આથી પરીક્ષાર્થીઓ નિબંધની તૈયારી સારી રીતે કરી શકે તે હેતુસર આપણે વહેલાસર ફક્ત તે યાદી આપની સમક્ષ મૂકી છે.

પ્રી-ટેસ્ટના નિબંધોની યાદી - List of Pre-test Essays

પ્રવીણ - પ્રશ્નપત્ર - ૧ (Pravin - Paper - 1)

૧. તેજસ્વી શુકતારક : શ્રી મગનભાઈ પટેલ (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - સપ્ટેમ્બર - ૨૦૧૩, પા. નં. ૩૦ થી ૩૫)
1. Shining Star: Shri Maganbhai Patel
૨. મંદિર મહોત્સવ : રોબિન્સવિલ મંદિર (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - ઓક્ટોબર - ૨૦૧૪, પા. નં. ૩૧ થી ૪૮)
2. Mandir Mahotsav: Robbinsville Mandir
૩. વેરાનમાં મ્હોરી ઊઠી હરિયાળી : રંભાસ પછાત વિદ્યાર્થીઓની આશ્રમશાળા (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - જુલાઈ - ૨૦૧૪, પા. નં. ૬ થી ૧૧, ૨૩)
3. Greenery flourishes in the desert: School for the underprivileged in Rambhas

પરીક્ષાર્થી શ્રી,

સસ્નેહ જય શ્રી સ્વામિનારાયણ

સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષા માર્ચ ૨૦૧૫ના નિબંધોની પૂર્વ તૈયારી માટે નીચે જણાવેલ માર્ગદર્શન અને સૂચનો ધ્યાનમાં લેવા વિનંતી.

૧. નિબંધ એટલે કોઈ નિશ્ચિત વિષય ઉપર વ્યવસ્થિત, ચિંતનપૂર્વક અને મુદ્દાસરનું લખાણ. સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષામાં પૂછાતા નિબંધો સામાન્ય જ્ઞાનના આધારે, પરીક્ષાર્થીના દૈનિક જીવનમાં સત્સંગના સદ્વાંચન અને કથા શ્રવણ અને મનન દ્વારા પ્રાપ્ત થયેલ જ્ઞાનની કસોટી કરતા ૩૫ થી ૪૦ લીટીમાં લખવાના હોય છે.
૨. પરીક્ષાર્થીઓની માગણીને માન આપીને આ વર્ષે પ્રી-ટેસ્ટમાં પૂછાનાર નિબંધોના વિષયો અગાઉથી પરીક્ષાર્થીના એકાઉન્ટમાં અપલોડ કરવામાં આવ્યા છે.
૩. પ્રી-ટેસ્ટમાં જે તે પરીક્ષામાં પૂછાનાર નિબંધોના ત્રણ ત્રણ વિષયો આપવામાં આવ્યા છે. માર્ચ ૨૦૧૫ની ફાઈનલ પરીક્ષામાં આ ત્રણ વિષયોમાંથી કોઈપણ એક નિબંધ ચોક્કસપણે પૂછાશે જ. માટે જો આપ આ ત્રણ ત્રણ વિષયો તૈયાર કરશો તો આપ ચોક્કસપણે એક નિબંધ મુખ્ય પરીક્ષામાં ખૂબ જ સારી રીતે લખી શકશો.
૪. આ નિબંધોનું સામાન્ય બંધારણ, લખાણ(મેટર) જૂના 'સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ'માંથી લેવામાં આવે છે.
૫. અહીં આપેલા નિબંધોનું લખાણ કેવળ દિશા સૂચક છે. આ જ લખાણ ગોખીને પરીક્ષામાં લખવાની જરૂર નથી. આથી વિશેષ સારા મુદ્દાઓનું ચિંતન-મનન કરી આપની રીતે પૂર્વ તૈયારી કરીને લખી શકો છો.
૬. ગુજરાતી માધ્યમ (ભાષા) સિવાયના પરીક્ષાર્થીઓ માટે : આ નિબંધોનું મૂળ પ્રકાશન ગુજરાતી ભાષામાં જ હોવાથી તેનું શબ્દશઃ ભાષાંતર ન કરતાં, તેનો ભાવાર્થ સમજીને પરીક્ષાર્થીએ પોતાની રીતે સમજીને તૈયારી કરવાની રહેશે. પરીક્ષા કાર્યાલય અંગ્રેજી કે હિન્દી ભાષામાં આ નિબંધોનું ભાષાંતર આપી નહિ શકે. તેથી ભાષાંતર કરવા અંગેનો પત્રવ્યવહાર કે ઈ-મેલ પણ પરીક્ષા કાર્યાલયને કરશો નહિ તેવી નમ્ર વિનંતી છે.
૭. ગુજરાતી ભાષા વાંચી, લખી કે બોલી ન શકતા હોય તેવા પરીક્ષાર્થીઓએ માતા-પિતા, વડીલો કે અન્ય સ્વજનો-સ્નેહીઓ પાસે વંચાવીને નિબંધનો ભાવાર્થ સમજી પોતાની રીતે, પોતાના શબ્દોમાં લખીને તૈયારી કરવાની રહેશે.
૮. One essay from the above list of essays will be asked in the Final Examination of March-2015.

સત્સંગ પ્રવિણ

નિબંધ - ૧

તેજસ્વી શુકતારક : શ્રી મગનભાઈ પટેલ

Shining Star : Shri Maganbhai Patel

નવખંડ ધરતી પર આજે વિશ્વના અનેક દેશોમાં સ્વામિનારાયણીય સત્સંગની આભા પ્રસરી રહી છે. બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજના પરમ કૃપાપાત્ર બનીને એ સ્વામિનારાયણીય અજવાળાને વિદેશમાં પ્રસરાવનાર આદિ તેજસ્વી શુકતારક હતા - ભક્તરાજ શ્રી મગનભાઈ પટેલ.

આખું નામ - મગનભાઈ મોતીભાઈ પટેલ. ખેડા જિલ્લાના પાટીદારોના ગામ વસોમાં ૧૫ ઓગષ્ટ, ૧૯૦૧ના રોજ તેમનો જન્મ. વતન વસોમાં જ શિક્ષણ લીધું. મેટ્રિકને એક વર્ષ હજુ બાકી હતું અને પિતા મોતીભાઈની ઈચ્છાનુસાર સન ૧૯૧૮માં માત્ર ૧૮ વર્ષની વયે પૂર્વ આફ્રિકા જવાનું થયું.

એ અરસામાં બ્રિટિશરો પૂર્વ આફ્રિકામાં હજુ નવી નવી રેલવે વિકસાવી રહ્યા હતા. આફ્રિકાના જંગલોમાં ગામથી દૂર રેલવેસ્ટેશનોના વહીવટ માટે માણસોની જરૂર હતી. આથી આ અરસામાં ભારતથી આવેલા જુવાન પાટીદારો તેમાં જોડાવા વધુ સાહસ કરતા. મગનભાઈ પણ એમાં જોડાયા. પરિવારજનો અને વતનથી દૂર એવા અંકુશમુક્ત વાતાવરણને કારણે મગનભાઈને ‘બાવા-પીવા’ની છૂટ થઈ ગયેલી. ધર્મ સાથે તેમને કોઈ લગાવ નહોતો રહ્યો. તેમનાં પત્ની ધાર્મિક સંસ્કારવાળાં હોઈ અગિયારસે ફરાળ બનાવે પણ મગનભાઈ આવી જાય તો તેઓ પહેરેલા બૂટે લાત મારીને ફરાળ સહિત વાસણોને રગડતાં કરી મૂકે.

૩૧-૩૨ વર્ષની ઉંમર સુધી તેમની જિંદગી ખાવું-પીવું અને મોજશોખમાં વીતી, પરંતુ તેમાં અચાનક જ એક અણધાર્યો વળાંક આવ્યો. વાત એમ હતી કે મગનભાઈ જ્યાં નોકરી કરતા હતા તે કિબ્વેઝી સ્ટેશને શાસ્ત્રીજી મહારાજના શિષ્ય હરમાનભાઈ મકનદાસ પટેલની બદલી થઈ. હરમાનભાઈને જાણવા મળ્યું કે મગનભાઈ છે સ્વભાવનો કડક માણસ ! શિસ્તપાલનમાં જરાય બાંધછોડ ચલાવી લે એવો નથી. હરમાનભાઈને શિસ્ત માટે તો કોઈ વાંધો નહોતો, પરંતુ જ્યારે એ ખબર પડી કે આ માણસને કોઈક પાર્ટીમાં બોલાવે, તો સામેથી જ કહી દે, ‘તું મને બે બોટલ અને આખું કૂકડું આપવાનો હોય તો જ બોલાવ, નહીં તો જતો રહે.’ આવા નાસ્તિક અને માંસભક્ષીની સાથે જ ક્વાર્ટરમાં રહેવાનું ? અને નોકરી પણ સાથે જ કરવાની ? નોકરીની સાથે કઈ રીતે ધર્મ પાળી શકાશે ? હરમાનભાઈએ નક્કી કર્યું કે નોકરી જ છોડી દેવી.

જોકે હરમાનભાઈના ફૂઆ આશાભાઈ પટેલ પણ સિનિયર ગ્રેડના સ્ટેશન માસ્ટર હતા. મગનભાઈના એ સારા મિત્ર. તેમણે હરમાનભાઈને સમજાવ્યા. તેથી હરમાનભાઈ કિબ્વેઝી જવા તૈયાર થયા. ત્યાં ગયા પછી હરમાનભાઈએ મગનભાઈથી છાની રીતે પોતાની ભક્તિ અને ધર્મ સાચવવા પ્રયત્ન શરૂ કર્યા. સવારમાં વહેલા ઊઠી જઈ, નહાઈ-ધોઈ, પૂજાપાઠ કરી લે. મગનભાઈ જાગે એ પહેલાં તૈયાર થઈ જાય. અગિયારસના ઉપવાસમાં પણ મગનભાઈને ખબર ન પડે તેમ ફળાહાર થઈ જતો.

આ દરમ્યાન એક સંધ્યાએ વોલીબોલની રમત રમતાં એક વિચિત્ર બનાવ બન્યો. સંધ્યા થઈ એટલે રમત રમનારાઓમાં મુસ્લિમો હતા તે નમાજ પઢવા જતા રહ્યા, શીખો પોતાની પ્રાર્થનામાં ગયા, ખ્રિસ્તીઓ ચર્ચમાં જતા રહ્યા. બાકી રહ્યા માત્ર મગનભાઈ, હરમાનભાઈ અને થોડાક ગુજરાતી હિન્દુઓ ! હરમાનભાઈએ લાગ જોઈને મગનભાઈને કહ્યું : ‘સૌ પોતપોતાના ધર્મ માટે કંઈક કરે છે. માત્ર આપણે હિન્દુઓ જ તેમાં બાકાત છીએ. આપણે પણ કંઈક કરવું જોઈએ.’

આ બનાવે મગનભાઈને વિચારતા કરી મૂક્યા અને ત્યારથી શરૂ થઈ સત્સંગની એક સરવાણી. તેમનું જીવન અજબ પરિવર્તનની સરાણે ચઢી ગયું. એમણે તો હરમાનભાઈ સાથે બેસી દરરોજ સ્વામીશ્રી શાસ્ત્રીજી મહારાજ અને શ્રી સહજાનંદ સ્વામી વિષે જાણવા માંડ્યું. દરરોજ વચનામૃત વંચાય. હરમાનભાઈ તેના પર યથાયોગ્ય નિરૂપણ કરે અને જરૂર પડે ત્યાં દેશમાં સદ્ગુરુ નિર્ગુણદાસ સ્વામીને પત્રો લખીને ખુલાસા પૂછવા માંડ્યા. ધીરે ધીરે તો નિર્ગુણદાસ સ્વામી તરફથી જ પાનાં ભરી ભરીને પત્રો આવવા માંડ્યા. મગનભાઈને તો વચનામૃત એક ખૂબ જ રસપ્રદ ગ્રંથ જણાવા માંડ્યો. વચ્ચે વચ્ચે શાસ્ત્રીજી મહારાજે પણ પત્રો દ્વારા એમની શંકાઓનું નિવારણ કરવા માંડ્યું.

મગનભાઈ આમ પણ મનના બહુ મક્કમ વ્યક્તિ હતા. ૧૯૩૦માં ગાંધીજીએ દાંડીકૂચ કરી તે નિમિત્તે દેશપ્રેમને કારણે મગનભાઈએ બીડી-સિગારેટ પીવાની પોતાની કુટેવને મૂકી દીધી હતી. તેમણે એ પાકીટો પોતાના ટેબલ ઉપર રોજ સામે દેખાય તેવી જ રીતે રાખી મૂક્યાં હતાં. અઢી વરસે તે પાકીટો બગડી ગયાં ત્યાં સુધી ત્યાં જ પડી રહ્યાં અને છેવટે તેને ફેંકી દીધાં. તેઓએ મનને કેવું મજબૂત બનાવ્યું હતું તેનું આ એક ઉદાહરણ છે. તેઓ એક વખત કોઈક બાબત નક્કી કરે પછી એને દૃઢતાથી અનુસરે. એ જ મક્કમ મન તેમને સત્સંગમાં પણ એટલું જ ઉપયોગી નીવડ્યું. શાસ્ત્રીજી મહારાજની લગની લાગ્યા પછી એને પણ દૃઢતાથી અનુસરવા લાગ્યા. અક્ષરપુરુષોત્તમની નિષ્ઠા અને પ્રગટનો મહિમા સમજાવા લાગ્યાં. વચનામૃત અને શિક્ષાપત્રીનો મહિમા સમજાયા પછી તો બાઈબલ, કુરાન, ભાગવત, રામાયણ અને ગ્રંથ સાહેબનો પણ અભ્યાસ કરવા માંડ્યા. સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાય અને તેના ગ્રંથો સાથે તે બધાનો તુલનાત્મક અભ્યાસ પણ કર્યો.

હવે તેઓ શાસ્ત્રીજી મહારાજનાં દર્શને આવવા ઝંખતા હતા. એ અરસામાં તેઓને રજા ઉપર ભારત આવવાનું થયું. શાસ્ત્રીજી મહારાજ બોયાસણ બિરાજતા હતા. સૌપ્રથમ વખત તેમનાં દર્શન કરવા મગનભાઈ ત્યાં ગયા. સભામંડપમાં પહોંચતાં જ, શાસ્ત્રીજી મહારાજનો મધુર આવકાર ભર્યો અવાજ સાંભળતાં જ વિચારો તો ક્યાંય જતા રહ્યા. શાસ્ત્રીજી મહારાજ ! કેવી દિવ્ય અલૌકિક મૂર્તિ ! મંદ હાસ્ય ! આસપાસના હરિભક્તો પણ જાણે દિવ્ય ! અક્ષરધામનું જે વર્ણન હરમાનભાઈ કરતા હતા, નિર્ગુણદાસ સ્વામી પત્રોમાં લખતા હતા, હા, બસ એ જ અનુભૂતિ ! મગનભાઈને થયું, વચનામૃતમાં કહ્યું છે એ જ આ નૈમિષારણ્ય ક્ષેત્ર ! બસ, આ જ સાક્ષાત્ ભગવાનમય સંત શાસ્ત્રીજી મહારાજ ! આ જ મારા ગુરુ ! અને ક્યારે એ પગમાં પડી ગયા એનો એમને પણ ખ્યાલ ન રહ્યો. તેઓ બાળકની જેમ શાસ્ત્રીજી મહારાજના પગ પકડીને ધ્રુસકે ને ધ્રુસકે રડવા માંડ્યા. શાસ્ત્રીજી મહારાજે તેમને આશીર્વાદ આપીને કહ્યું, ‘તમારા પૂર્વના બધા જ ગુના માફ છે. હવે સત્સંગ કરજો ને કરાવજો.’

બોયાસણમાં સદ્ગુરુ નિર્ગુણદાસ સ્વામીના સમાગમથી તો સત્સંગની લગની બરાબર લાગી ગઈ, એટલું જ નહીં, નિર્ગુણદાસ સ્વામીએ તેમને વચનામૃત ગઢડા પ્રથમનું ૨૭ અને ગઢડા અંત્યનું ૨૬ વંચાવી એટલું બરાબર સમજાવી દીધું કે જેમના હૃદયમાં ભગવાન અખંડ બિરાજમાન છે એવા શાસ્ત્રીજી મહારાજ, ભગવાનની પેઠે સેવા કરવા યોગ્ય સંત છે. શાસ્ત્રીજી મહારાજનાં આ દર્શન થયાં પછી તો મગનભાઈનાં અંગોઅંગમાં અપૂર્વ ચેતન આવી ગયું. પાછા આવતાં મોઝાસામાં ભાદરણના પાટીદાર ત્રિભોવનદાસ મૂળજીભાઈનો ભેટો થઈ ગયો અને પહેલી ઓળખાણે જ હેત થઈ ગયું. પછી તો એ પણ સત્સંગમાં વણાઈ જ ગયા. મગનભાઈ પૂર્વ આફ્રિકા રેલવેમાં સિનિયર ગ્રેડના સ્ટેશનમાસ્તર હોવા છતાં કપાળમાં ભપકાદાર સ્વામિનારાયણીય તિલક-ચાંદલો કરતા. કોઈ તેમને મશ્કરીમાં કહે કે બહુ મોટું તિલક કર્યું છે ! તો ખુમારીપૂર્વક કહેતા કે ‘ભગવાને આવડું કપાળ આપ્યું છે તે આટલું લાંબું કર્યું છે પણ વધુ મોટું કપાળ હોત તો આથી પણ વધુ કરત.’

તેમણે હવે બીજાને પણ ગુરુહરિ શાસ્ત્રીજી મહારાજના રંગે રંગવાનું ચાલુ કરી દીધું. એમ કરતાં કરતાં સન ૧૯૩૪માં કિબેઝીમાં મગનભાઈના બંગલે ‘શ્રી પૂર્વ આફ્રિકા સત્સંગ મંડળ’ની શરૂઆત થઈ.

મગનભાઈ એટલે મહિમાની મૂર્તિ. એ મહિમાના મૂળમાં એક તાદૃશ્ય અનુભૂતિ હતી. પૂર્વ આફ્રિકામાં મકીન્ડુમાં મગનભાઈ સ્ટેશનમાસ્તર તરીકે હતા. અહીં તેમને ત્યાં તા. ૫-૮-૩૩ના રોજ ભાદરણના શ્રી મણિભાઈ ઉમેદભાઈ પટેલ દેશમાં આવવાના હોવાથી સમૈયો ગોઠવ્યો હતો. આ સમૈયામાં નૈરોબીથી મણિભાઈ, ચતુરભાઈ, કેશવલાલ, ઈશ્વરભાઈ,

સિમ્બાથી વિઠ્ઠલભાઈ, મોમ્બાસાથી ત્રિભોવનદાસભાઈ તથા ધર્મજવાળા અંબાલાલભાઈ વગેરે પણ આવ્યા હતા. આ સમૈયામાં કથાવાર્તા, ધૂન અને ભજનના પ્રતાપે મગનભાઈની વૃત્તિઓ સ્થિર થઈ ગઈ. ધૂન અને ભજનના પ્રતાપે તેમની વૃત્તિ જગતનાં માયિક આવરણોમાંથી છૂટી થઈને હૃદયાકાશમાં લીન થઈ ગઈ અને તે સ્થિતિમાં તેમને સર્વત્ર દિવ્ય પ્રકાશ દેખાવો. શ્રીજીમહારાજ, અક્ષરબ્રહ્મ ગુણાતીતાનંદ સ્વામી, શાસ્ત્રીજી મહારાજ તથા અનંત મુક્તોનાં તેમને દર્શન થયાં. તેમના આનંદનો પાર ન રહ્યો. સર્વ હરિભક્તો પણ તેમને શ્રીજીના સંબંધે દિવ્ય પ્રકાશમય જણાયા. શ્રીજીના સંબંધથી સર્વત્ર અક્ષરધામમય બનેલું વાતાવરણ જોઈ, મગનભાઈ તે જ સ્થિતિમાં સૌને દંડવત્ કરવા લાગ્યા. સમાધિમાંથી જાગ્રત અવસ્થામાં આવતાં આ દિવ્ય અનુભવથી તેમણે, સત્સંગમય જીવન જીવવાનો સંકલ્પ કરી લીધો.

હવે મગનભાઈએ સત્સંગ માટે પોતાનું સમગ્ર જીવન અર્પણ કરી દીધું હતું. તેમના ઉત્સાહથી પૂર્વ આફ્રિકામાં ઠેરઠેર સમૈયાઓની શ્રેણી શરૂ થઈ. ટરોરો, મોમ્બાસા, જિન્જા, કંપાલા, મકીન્ડુ, નૈરોબી વગેરે વિવિધ નગરોમાં સમૈયાઓ થાય અને મગનભાઈ તથા અન્ય હરિભક્તોની કથા-વાર્તાના અપૂર્વ આનંદથી વાતાવરણ અત્યંત દિવ્ય બની જાય. એક તરફ મગનભાઈ વગેરે આમ કથાવાર્તાની ગંગા વહાવી રહ્યા હતા, તો બીજી તરફ, નવા થતા આ સત્સંગીઓને શુદ્ધ ઉપાસનાની યથાર્થ સમજણ કરાવવા, મોક્ષનું દ્વાર સત્પુરુષ છે તે સમજાવવા, અને શાસ્ત્રીજી મહારાજનો અપરિમિત મહિમા સમજાવી સૌને પાકા સત્સંગી કરવા શ્રી નિર્ગુણદાસ સ્વામીએ જ્ઞાનપ્રવાહ પત્રો દ્વારા વહેતો મૂક્યો હતો. તેમના પત્રો પાંચ-દસ પાનાંના નહીં, પરંતુ સેંકડો પાનાંની માળારૂપે થોકબંધ આફ્રિકામાં જતા. તેમના સરળ, મુદ્દાસર અને કોઈની પણ ટીકા કે નિંદા સિવાય લખાયેલા પત્રો, સૌ સત્સંગીઓ અપૂર્વ ઉત્સાહથી વાંચતા. એ પત્રોમાંથી વધુ પ્રેરણા મેળવીને મગનભાઈની કથાવાર્તા પણ આફ્રિકાના સત્સંગઘડતરમાં એવું જ કાર્ય કરી રહી હતી. અક્ષરયુક્ત પુરુષોત્તમ ભગવાનની સર્વોપરિ શુદ્ધ ઉપાસનાના પ્રવર્તનની મગનભાઈને લગની લાગી હતી.

શાસ્ત્રીજી મહારાજનો મહિમા કહેવાનો અને સમજાવવાનો તેમનો આગ્રહ અજોડ હતો. મગનભાઈને સ્ટેશન માસ્ટરની નોકરી દરમિયાન સ્ટેશન ઉપર ટ્રેનના બે-ત્રણ સમયના આવાગમન સિવાય બીજું કામ ન હોય ત્યારે બીજાં રેલવેસ્ટેશનો ઉપર નોકરી કરતા ભક્તો સાથે કલાકો સુધી તાર દ્વારા સત્સંગની વાતો કરતા, અને સૌને ભગવાન ને સંતનો મહિમા તથા પ્રાપ્તિનું અનુસંધાન આપતા. ક્યારેક માર્ગે ચાલતાં રસ્તામાં કોઈ ઓળખીતો જો મળે તો તેને ભગવાનની વાતો કહે, અને સાંભળનારની મરજી હોય કે ન હોય પણ વાતો પ્રગટ સત્પુરુષના મહિમાની જરૂર કરે : ‘ભગવાનનું સાક્ષાત્ સ્વરૂપ, જેના સર્વે અવયવ ભગવાન રૂપ જ થઈ ગયા છે એવા ભગવાનને અખંડ ધારણ કરનાર સંત આપણને મળ્યા છે તે બોચાસણવાળા પૂજ્ય શાસ્ત્રીજી મહારાજ છે. તેમને સેવી લેજો. મન, કર્મ, વચને સેવા કરી લેજો. તો જ બ્રહ્મરૂપ થશો અને ભગવાનના ધામને પામશો. આવા તો એ એક જ છે. તેમને સેવે તો શ્રીજીમહારાજ સેવાઈ રહ્યા. તેમની પ્રાપ્તિ એ શ્રીજીની પ્રગટ પ્રાપ્તિ થઈ રહી. જેને મરીને પામવા હતા તે દેહ છતાં જ શાસ્ત્રીજી મહારાજ દ્વારા જ મળી ગયા.’ એમ તેઓ વારંવાર કહેતા. વાત કરતાં કરતાં તેઓનું હૃદય ભરાઈ આવતું અને ગદ્ગદ કંઠે બોલી શકતા નહીં.

મગનભાઈના એ મહિમાસભર વ્યક્તિત્વનું વર્ણન કરતાં શ્રી હરમાનભાઈ પટેલ લખે છે : “શાસ્ત્રીજી મહારાજ તેમજ યોગીજી મહારાજ, નિર્ગુણ સ્વામી આદિના ગુણોનું વર્ણન કરતાં કેટલીયે વાર ગળગળા થઈ જતા. આરતી ઉતારતી વખતે તેઓ દેહભાન ભૂલી જતા, ને તેમને ઝાલી રાખવા પડતા. ભાવાવેશમાં આવીને ક્યારેક ચોધાર આંસુએ રડતા. કેટલીયે વાર ધૂનમાં પણ તેઓ એકચિત્ત બની ઢળી પડતા. વચનામૃત જેવો ગ્રંથ દુનિયામાં કોઈ નથી ને શાસ્ત્રીજી મહારાજ જેવા કોઈ સાધુ નથી, તે માટે તેઓ ચેલેન્જ કરતા : ‘શાસ્ત્રીજી મહારાજના દરેક ગુણો શ્રીજીમહારાજ જેવા છે, તેઓ શ્રીજીસ્વરૂપ છે, તેમને સેવે શ્રીજીમહારાજ સેવાઈ રહ્યા. તેમની પ્રાપ્તિએ શ્રીજીની પ્રગટ પ્રાપ્તિ થઈ રહી, જેને મરીને પામવા હતા તે દેહ છતાં જ શાસ્ત્રીજી મહારાજ દ્વારા મળી ગયા છે.’ આ મહિમા કહેવામાં તેઓ કેટલીક વાર કહેતા કે ‘હું શું વધારે કહું ! જીભ ઝાલીને કહું છું, નહીં તો જગત મારાં ઠાઠાં ભાગી નાખે ! શાસ્ત્રીજી મહારાજને આપણે જોઈએ તેવા ઓળખી શક્યા નહીં. હવે પૂજ્ય યોગીજી મહારાજને ઓળખવામાં કસર ન રહી જાય તે જો જો.’ મગનભાઈને સંતો અને હરિભક્તોમાં એટલું બધું સુહૃદપણું હતું કે હરિભક્તોથી પણ છૂટા પડતાં તેઓ દ્રવી જતા. હરિભક્તોનું એ અપાર માહાત્મ્ય સમજતા ને તેમની ચરણરજ ઈચ્છતા. જીજ્ઞાના સમૈયામાં તો તેઓ વ્યાસપીઠ પરથી ઊઠીને હરિભક્તો સમક્ષ આળોટતા કે પ્રત્યક્ષના શ્રીજીના ભક્તોની આ ચરણરજ દુર્લભ છે ! વડતાલમાં પણ જ્યાં શ્રીજીમહારાજ બંને આંબાની ડાળીએ બાગમાં હીંચેલા છે ત્યાં એ રમણરેતીનું સ્મરણ કરતાં આળોટવા મંડેલા. શાસ્ત્રીજી મહારાજ પણ તેમની આવી ભક્તિ જોઈ ચંદન ચર્યાંને મગનભાઈને સારંગપુરમાં ભેટલા. તે

પ્રસાદીના સ્વામીનાં વસ્ત્ર તેમણે રાખેલાં, ને જે આવે તેમને દર્શન કરાવતા.”

મગનભાઈ જ્યાં બિરાજે ત્યાં મંદિરના વાતાવરણનો જ અનુભવ થાય. તેમના ઘેર કથાવાર્તાના અખાડા જામતા. તેઓ કહેતા : ‘શાસ્ત્રીજી મહારાજ કહે ત્યારે એમના વચને વેચાઈ જવું પડે તોય શું ! જ્યારે બળદ, ગાય, ભેંસ, બકરાના અવતાર થયા હશે, ત્યારે ઘણી વાર વેચાયા હોઈશું. તો આ મનુષ્ય દેહે શાસ્ત્રીજી મહારાજનું વચન ‘ગઢપુર મંદિર પૂર્ણ કરો,’ તે પાળતાં વેચાવું પડે તોપણ શું ? ગુરુહરિના વચન પર મરી ફીટવાનું છે. આ દેહ ભગવાનપરાયણ કરી દેવું એ જ આપણા સૌનું જીવનથ્યેય હોય. નિષ્કુળાનંદ સ્વામીએ કહ્યું: ‘ફેરો ફાવ્યો આ વાર...’ એ ન્યાયે આ જ અવતારે, આ અલભ્ય લાભ શાસ્ત્રીજી મહારાજ અને યોગીજી મહારાજ જેવા પરમ ભાગવત સંતના પ્રસંગથી મળ્યો છે.’

મગનભાઈ આવી મહિમાની વાતો કરવા બેસે ત્યારે સમય થંભી જતો. તેઓ ખૂબ આનંદ અને બળમાં આવી વાતો કરે ત્યારે સાંજે આરતી કરી સભા ભરાઈ હોય તે ઘણી વખત સવારમાં દાતણ લઈને ઊઠે, ત્યાં સુધી આખી રાત બ્રહ્માનંદ વરસતો જ હોય. એકવાર મોખાસાથી થિયોસોફિકલ સોસાયટીના પ્રમુખ સી. ટી. પટેલ એલ્ડોરેટ સમૈયામાં આવેલા. તેમને એમ કે કથાવાર્તાનો ટાઈમ અમુક જ હોવો જોઈએ. પણ જ્યારે તેઓએ મગનભાઈની વાણી સાંભળી ત્યારે તેઓનું મંતવ્ય બદલાઈ ગયું કે ભગવાનની કથાવાર્તા, કીર્તનનો વખત અમુક હોઈ શકે જ નહીં.

વચનામૃત, સ્વામીની વાતો આદિ ગ્રંથોનો તેમનો અભ્યાસ એટલો વિશાળ હતો કે તેમણે કોઈ વચનામૃત કોઈ દિવસ પૂરું કર્યું નથી. કારણ કે એક વચનામૃતના સંબંધથી બીજું કઢાવે, ને ચાર પાંચ કલાક તે સમજાવવા જતાં વખત પૂરો થઈ જાય ! કથા કરવામાં તેઓ એવા મશગૂલ બની જતા કે વખત કેટલો થયો તેનો પણ ખ્યાલ ન રહેતો ! ઘણીવાર આખી રાત પણ વીતી જાય !

તેઓ જંજા હતા ત્યારે સાંજે ગામમાં કથાવાર્તા કરી પોતાને ઘેર સ્ટેશને પાછા વળતાં તેમને ઘણું જ મોડું થઈ જતું. આથી સત્સંગ કરાવવા અર્થે તેમણે સાંજના વાળુનો પણ ત્યાગ કરી દીધેલો. તેઓ અપલેન્ડ હતા ત્યારે નૈરોબી સત્સંગ કરાવવા જતા. ત્યાં પણ પાછા વળતાં મોડું થઈ જતું હોવાથી સાંજે જમ્યા વિના ઘેર અપલેન્ડ પાછા જતા. આવું તો ઘણાં વર્ષો સુધી ચાલ્યું હતું. સત્સંગ કરાવવા ખાતર તેમણે પોતાના દેહની પણ પરવા કરી નથી.

મગનભાઈ પ્રેમલક્ષણા ભક્તિ અને દાસત્વભક્તિનું સ્વરૂપ હતા. તેઓ હંમેશાં પોતાની પૂજાની મૂર્તિઓ માટે જાતે બનાવેલા નવા ને મોટા ફૂલના હાર ધરાવતા. આરતી ઉતારતાં તેઓ એવા તન્મય થઈ જતા કે પોતે દેહભાન ભૂલી જતા. શ્રીજીમહારાજ તેમજ શાસ્ત્રીજી મહારાજના સ્વરૂપમાં તદ્રૂપ થઈ જતા. એ ભક્તિને કારણે જ તેઓ મૂર્તિની આમન્યા માટે ખૂબ કડક હતા.

એકવાર તેઓ અન્ય સંપ્રદાયના એક કીર્તનભક્તિના કાર્યક્રમમાં ગયા હતા. કેટલાક લોકો રામચંદ્રજીની મૂર્તિ આગળ કીર્તન ભક્તિ કરતા હતા અને તેમાંથી કેટલાક તે જ સ્થળે બીડી-ગાંજો ફૂંકવા લાગ્યા. આ દૃશ્ય મગનભાઈ જોઈ શક્યા નહીં. તેમણે તરત જ તે લોકોને કહ્યું : ‘તમે જે કીર્તન-ભક્તિ કરો છો તે ભગવાનને પ્રત્યક્ષ સમજી કરો છો કે કેમ ? અને જો પ્રત્યક્ષ સમજતા હો તો, પોતાના પિતાની આગળ કે કોઈ મુરબ્બીની સમીપમાં આપણે બીડી હુક્કો પી શકતા નથી તો ભગવાન રામચંદ્રજીની મૂર્તિ સમીપમાં કેમ પી શકાય ?’ અને તેની એવી અસર થઈ કે તે લોકો વ્યસનમુક્ત થયા.

શાસ્ત્રીજી મહારાજે મગનભાઈને આજ્ઞા આપી હતી કે આફ્રિકામાં કોઈ નવો સત્સંગી થાય તેને દેશમાં આવતાં ઘણાં વર્ષો થાય. એ દરમ્યાન કંઠી વિના કેમ ચાલે ? એટલે જે કોઈ નવો સત્સંગી થાય તેને તમારે વર્તમાન ધરાવવાં અને કંઠી પહેરાવવી. આથી આફ્રિકામાં નવા બનનાર હરિભક્તને તેઓ વર્તમાન (ગુરુમંત્ર) ધરાવતા, પરંતુ સાથે એવું પણ કહેતા કે ‘દેશમાં જાવ ત્યારે તરત જ શાસ્ત્રીજી મહારાજ કે યોગીજી મહારાજ પાસે ફરી વર્તમાન ધરાવી લેજો. કારણ, એ જ આપણા સૌના ગુરુ છે. અને એ ગુરુ જ તો ગોવિન્દ છે.’

કથાવાર્તા દ્વારા કેટલાય જીવોને મગનભાઈએ દુર્વ્યસનોમાંથી મુક્ત કરી, ભગવાનના સુખનો લહાવો લેતા કરી દીધા હતા. ટરોરો, જંજા, ખાલે, કંપાલા, મસાકા, બ્વીકવે, બુડોપા, બુકેડીઆ, નાઈગોન્ગેરો, નાઈરોબી અને મોખાસા વગેરે સ્થળોમાં મગનભાઈના પ્રસંગમાં આવનારને સત્સંગની લગની લાગી હતી. આફ્રિકામાં જોબન પગી જેવા અનેકને મગનભાઈએ માળા ફેરવતા કર્યા હતા. ટરોરોના જાણીતા ડોક્ટર પંડિત વગેરે પ્રતિષ્ઠિત આ જોઈને કહેતા કે ભગવાન સ્વામિનારાયણે તો ગધેડાંની ગાયો કરી હતી, પણ એવું તો આજે તેમના શિષ્યોના શિષ્યો પણ કરે છે, એ જ ભગવાનનું સર્વોપરિપણું છે. ‘આ પ્રતાપ મારા ગુરુ શાસ્ત્રીજી મહારાજનો છે.’ મગનભાઈ છાતી સૌને ઠોકી કહેતા.

સત્સંગીઓ તરફનો તેમનો ભાવ, પ્રેમ, લાગણી અવર્ણનીય હતાં. જો કોઈને દુખિયો જુએ કે મગનભાઈ તરત જ ભગવાન સ્વામિનારાયણ, અક્ષરબ્રહ્મ ગુણાતીતાનંદ સ્વામી તથા શાસ્ત્રીજી મહારાજને પ્રાર્થના કરે. માળાઓ ફેરવે. તેમની પ્રાર્થનાથી ઘણાંનાં દુઃખ ચમત્કારિક રીતે દૂર થયાં છે. શાસ્ત્રીજી મહારાજ એમના દ્વારા આફ્રિકામાં ઘણાને પોતાના ઐશ્વર્યથી રક્ષણ પૂરું પાડતા.

એવા અનેક પ્રસંગોમાં મંગળભાઈનો દાખલો તો જગજાહેર છે. એ સમયે આફ્રિકામાં કંપાલા રહેતા તારાપુરવાળા મૂળજીભાઈ (જેઓ પાછળથી લંડનમાં વેમ્બલી ખાતે સ્થળાંતરિત થયા હતા) આ પ્રસંગનું વર્ણન કરતાં જણાવે છે : ‘મંગળભાઈને બ્લેક વોટરનો રોગ થયો હતો. આ રોગ જેને થાય તે માણસ જીવતો બચ્યો હોય એવો કોઈ કેસ હજુ સુધી મારા સાંભળવામાં આવ્યો નથી. કંપાલા હોસ્પિટલના ડૉ. યુનીભાઈએ મને અને બીજા મારી સાથેના સત્સંગીને બોલાવીને જણાવ્યું કે, આ ભાઈ હવે વધુ જીવી શકે તેમ નથી તો તાત્કાલિક તેમના જે સગા હોય તેમને બોલાવી લો. રાત્રિનો સમય થવા આવ્યો હતો. એ તુરત જ પ્રભુદાસ લાલાજીને ત્યાં સભા ચાલુ હતી ત્યાં દોડ્યા. સઘળી વાત જણાવી. ત્રિભોવનકાકાએ તરત જ ટરોરો ખાતે મગનભાઈને ફોન ઉપર વાત કરી. તેમણે તમામ હરિભક્તોને ૫૧ માળા ફેરવવા અને મહારાજ તથા શાસ્ત્રીજી મહારાજને પ્રાર્થના કરવા જણાવ્યું, ત્રિભોવનકાકાને ૩૦૦ માળા ફેરવવા કહ્યું. મગનભાઈએ આખી રાત્રી જાગીને માળા ફેરવી અને શ્રીજીમહારાજ તથા શાસ્ત્રીજી મહારાજને પ્રાર્થના કરી.’

મૂળજીભાઈ આગળ જણાવે છે : ‘હું હોસ્પિટલમાં હાજર હતો. રાત્રે બાર વાગે મંગળકાકાએ કહ્યું, ‘આ જમના દૂતો મને લેવા આવ્યા છે.’ તેમનું વર્ણન પણ કર્યું. અમને કંઈ દેખાતું ન હતું. અમને લવારો હોય એમ લાગ્યું, એટલે શાંત રહેવા અને માળા ફેરવવા જણાવ્યું. થોડીવારમાં તો એ બોલ્યા કે ‘શાસ્ત્રીજી મહારાજ પધાર્યા હતા. મને પૂછ્યું કે મને કેમ બોલાવ્યો ? મેં યમના દૂત બતાવ્યા. શાસ્ત્રીજી મહારાજે હાકોટો કર્યો અને તેમને ભગાડ્યા.’ શાસ્ત્રીજી મહારાજે મંગળભાઈને જણાવ્યું કે, ‘આજે આમ તો તમારું આયુષ્ય પૂરું થાય છે. પરંતુ હવે પચીસ વર્ષનું આયુષ્ય આપું છું. હવે ધર્મ-નિયમ બરાબર પાળજો અને સત્સંગ કરજો.’

શાસ્ત્રીજી મહારાજ તથા શ્રીજીમહારાજે તેમના દ્વારા આવાં અનેક ઐશ્વર્યોનું દર્શન કરાવ્યું છે. ગુરુહરિનો આવો અત્યંત રાજીપો અને ઐશ્વર્યો હોવા છતાં તેઓએ નીચામાં નીચી ટહેલ પણ કરી છે, દાસના દાસ થઈને સત્સંગ કર્યો છે.

મગનભાઈને પોતાનું અંતિમ દિવ્ય સુખ આપવા માટે જ શાસ્ત્રીજી મહારાજે તેમને સન ૧૯૫૧માં આફ્રિકાથી વિશાળ હરિભક્તોના સત્સંગ સમુદાય સાથે દેશમાં બોલાવ્યા હતા. અંતિમ ઘડી સુધી શાસ્ત્રીજી મહારાજે તેમને પોતાના સાંનિધ્યનું અપાર સુખ આપ્યું અને તા. ૧૦-૫-૧૯૫૧ના રોજ પોતાના પ્રાણ સંકેલી લીધા. મગનભાઈને આ આઘાત જીરવવો અસહ્ય હતો, પરંતુ શાસ્ત્રીજી મહારાજે આપેલા સુખની સ્મૃતિ કરતાં કરતાં તેઓ માંડ માંડ એ ઘા જીરવી શક્યા. પ્રાણપ્રિય ગુરુહરિની વિરહવેદના સાથે તેમણે શેષ જીવન કથાવાર્તાની કરેલી આજ્ઞામાં વિતાવવા માંડ્યું.

બરાબર એક વર્ષ પછી આફ્રિકામાં શાસ્ત્રીજી મહારાજના પ્રથમ શ્રાદ્ધ-સ્મૃતિપર્વ નિમિત્તે યુગાન્ડામાં મ્બાલેમાં સમૈયો રાખેલો. મગનભાઈએ આફ્રિકાના તમામ હરિભક્તોને કાગળ લખાવરાવેલા કે આ સમૈયો કોઈ ચૂકતા નહીં. આ એક અલૌકિક સમૈયો થઈ ગયો. મગનભાઈએ રવિવાર તા. ૭-૮-૧૯૫૧ના એ દિવસે સાંજના ચાર કલાક ઉપરાંત સતત કથાવાર્તા મ્બાલેમાં કરી, શ્રોતાજનોને ભક્તિભાવમાં તરબોળ કરી દીધા. એવો દિવ્ય આનંદ લૂંટાવ્યો તે વખતે જે જે ભાગ્યશાળી જીવો હાજર હતા, તેઓ કહે છે કે, ‘આવી કથા તો તેમના મુખારવિંદ થકી આજદિન સુધી સાંભળી જ નથી.’ તે જ રાત્રે તેઓ ટરોરો જઈ પોઢ્યા અને સંવત ૨૦૦૮, ભાદરવા વદ ૫, સોમવાર, તા. ૮-૮-૧૯૫૧ની સવારે લગભગ ત્રણ વાગ્યાની આસપાસ બ્રાહ્મમુહૂર્તે ગુરુહરિની યાદમાં જ દેહ છોડી દીધો.

મગનભાઈ ઘણી વખત કહેતા કે ‘સ્વામિનારાયણના શિષ્યને મૃત્યુ એ અક્ષરધામ-ગમનનો ઉત્સવ છે. દેહ મરે છે પરંતુ આત્મા તો અક્ષરધામમાં જઈ સુખિયો બની શ્રીજીમહારાજની સેવામાં બેસી જાય છે. આ મંગલમય અવસર માટે શોક કરવાનો હોય જ નહીં. માટે મારા અક્ષરધામ-ગમન સમયે કોઈએ શોક કરવો નહીં, પરંતુ બેન્ડવાજાં સહિત અંતિમયાત્રા મનાવજો.’ અને, બરેબર ! આફ્રિકાના સૌ હરિભક્તોએ તેમના શબ્દોને સંપૂર્ણ માન આપ્યું અને બેન્ડવાજાં સહિત અંતિમ યાત્રા મનાવી !

તેઓએ શાસ્ત્રીજી મહારાજને વચન આપ્યું હતું કે આફ્રિકાના હરિભક્તો ગઢપુરના મંદિરની જવાબદારી ઉપાડી લેશે. મગનભાઈના અક્ષરવાસ બાદ હરમાનભાઈ, ત્રિભોવનદાસ, સી. ટી. પટેલ, એ. પી. પટેલ સહિત તમામ હરિભક્તોએ જવાબદારી નિભાવી મંદિરનું કામ પૂર્ણ કર્યું.

માત્ર ૫૧ વર્ષની જિંદગીમાં મગનભાઈએ અનેક જિંદગીઓનું સાટું વાળી દીધું. મહિમાના દિવ્ય મહાસાગરમાં મહાલતા મગનભાઈ સેવા-સત્સંગ-કથાવાર્તા વગેરેથી શાસ્ત્રીજી મહારાજની માળાના મણકા બની ગયા. આજે વિદેશમાં વ્યાપેલા વિરાટ બી.એ.પી.એસ. સત્સંગનું દર્શન કરતાં મગનભાઈની કૃતજ્ઞભાવે સ્મૃતિ થાય છે, જેઓ વિદેશમાં આ સત્સંગનું બીજ બન્યા હતા. વિદેશમાં સ્વામિનારાયણીય સત્સંગની ધજા લહેરાવનાર અને આદર્શ ભક્તરાજ એ મહાપુરુષને કોટિ કોટિ વંદન ! ♦

નિબંધ - ૨

મંદિર મહોત્સવ : રોબિન્સવિલ મંદિર

Mandir Mahotsav : Robbinsville Mandir

આટલો બધો મોટો માનવ મહેરામણ ?

અને તે પણ અમેરિકામાં ? ન્યૂજર્સીમાં અક્ષરધામ પરિસરના પ્રાંગણમાં નાંખી નજર ન પહોંચે ત્યાં સુધી ઊછળતો આ ભક્ત મહેરામણ કેમ ઊમટ્યો હતો ? હા, એ અવસર હતો - મંદિર મહોત્સવનો, રોબિન્સવિલમાં રચાયેલા શિખરબદ્ધ બી.એ.પી.એસ. મંદિરના પ્રાણપ્રતિષ્ઠા મહોત્સવનો. અમેરિકામાં પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના સાંનિધ્યમાં હિન્દુ ધર્મના ઇતિહાસની એ ચરમસીમા સમી પળો હતી. પ્રાણપ્યારા ગુરુહરિ પ્રમુખસ્વામી મહારાજનાં દર્શને ઊમટેલો હજારો ભક્તોનો મહેરામણ એ અપૂર્વ મહોત્સવનો સાક્ષી બની રહ્યો. આ પ્રતિષ્ઠા ઉત્સવની મોંઘેરી સ્મૃતિઓ હવે પછીનાં પૃષ્ઠોમાં પ્રસ્તુત છે...

જ્યાં હજારો યજમાન ભક્તોએ સમર્પણભાવે અર્પી વિશ્વશાંતિની આહુતિઓ...અદ્વિતીય મહાયજ્ઞ

યજ્ઞ.

ભારતીય સંસ્કૃતિની એક વિરલ અને દિવ્ય પરંપરા, જેમાં સમસ્ત પ્રાણીમાત્રના કલ્યાણની પવિત્ર પ્રાર્થનાઓથી લઈને સૌ કોઈના હિત માટે સમર્પણની પવિત્ર ભાવનાઓનું વૈદિક ગાન ગુંજે છે.

એવું એ પવિત્ર વૈદિક ગાન અમેરિકાના નભમંડળમાં ગુંજી ઊઠ્યું - રોબિન્સવિલમાં મંદિર મહોત્સવ દરમ્યાન.

મંદિર મહોત્સવનો પ્રારંભ થયો - વેદોક્ત વિશ્વશાંતિ મહાયજ્ઞથી, જે અમેરિકાની ધરતી પર સાચા અર્થમાં એક મહાન યજ્ઞ બની રહ્યો હતો.

પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના દિવ્ય સંકલ્પે ન્યૂજર્સી રાજ્યના રોબિન્સવિલ નગર ખાતે રચાઈ રહેલા અક્ષરધામ સંકુલમાં શિખરબદ્ધ બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ મંદિરના પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવના ઉપક્રમે યોજાયેલો આ મહાયજ્ઞ અમેરિકાના ઇતિહાસમાં મોટામાં મોટો યજ્ઞ હતો. આ મહાયજ્ઞમાં કુલ છ સત્રોમાં ૧૭,૫૬૬ યજમાનોએ યજ્ઞનારાયણને આહુતિઓ આપીને અંતઃકરણ- પૂર્વક પ્રાર્થનાઓ કરી હતી.

વિક્રમ સંવત ૨૦૭૦, શ્રાવણ સુદ પાંચમ ને શુક્રવાર તા. ૧-૮-૨૦૧૪ના રોજ બપોરના ૨:૩૦ વાગ્યાથી મહાયજ્ઞના પ્રથમ સત્રની શરૂઆત થઈ અને શ્રાવણ સુદ ૧૩, ૮-૮-૨૦૧૪ના રોજ બપોરે ૧૨:૩૦ વાગે આ મહાયજ્ઞનું અંતિમ સત્ર સમાપ્ત થયું. મહાયજ્ઞ ભલે એક અઠવાડિયામાં પૂર્ણ થયો, પરંતુ તેની પૂર્વ તૈયારીઓ તો આશરે એક વર્ષથી ચાલી રહી હતી.

મહાયજ્ઞની પૂર્વ તૈયારીઓમાં સૌથી પાયાની જરૂરિયાત હતી - રજિસ્ટ્રેશનની. અમેરિકામાં સેંકડો માઈલો દૂર વસતા

લોકોને મહાયજ્ઞમાં યજમાન તરીકે જોડાવવાની સરળતા રહે તે માટે ઓનલાઈન રજિસ્ટ્રેશનની વિશેષ સુવિધા વિચારવામાં આવી. આ ઓનલાઈન રજિસ્ટ્રેશન માટે એક ક્ષતિરહિત સોફ્ટવેર બનાવવું જરૂરી હતું, જેને પ્રોફેશનલી તૈયાર કરવામાં ખર્ચ લાખોમાં થઈ શકે તેમ હતો, અને ઓછામાં ઓછો દોઢેક વર્ષનો સમય પણ લાગે તેમ હતો, પરંતુ સંસ્થાના આઠ સમર્પિત આઈ.ટી. નિષ્ણાત સ્વયંસેવકોએ અવિરત કાર્ય કરીને નિઃસ્વાર્થભાવે સેવામાં માત્ર દોઢ મહિનામાં એ સોફ્ટવેર તૈયાર કર્યું, એક ભારતીય કંપનીના સહયોગથી. રાતોની રાતો જાગીને સ્વયંસેવકોએ તૈયાર કરેલા આ સોફ્ટવેર ઉપરાંત સંસ્થાના કિશોર સ્વયંસેવકોએ આધુનિક આઈપેડ ટેબ્લેટ પર એક એપ્લિકેશન પણ તૈયાર કરી હતી, જેમાં રજિસ્ટર્ડ થયેલા કયા યજમાન કયા કેન્દ્રમાંથી આવ્યા છે અને તેમણે કયા કુંડ પર કયા સ્થાને બેસવાનું છે, તેનું સુંદર માર્ગદર્શન હોય ! દરેક યજમાન માટે યજ્ઞકુંડ પર બેસવા માટે ઇલેક્ટ્રોનિક ઓળખપત્ર તૈયાર કરવામાં આવ્યાં હતાં. યજમાન આ ઓળખપત્ર લઈને રજિસ્ટ્રેશન ડેસ્ક પર પધારે એટલે બાકીની તમામ વ્યવસ્થા સ્વયંસેવકો સંભાળી લે. આ રીતે આશરે ૧૮,૦૦૦ યજમાનોની ઝીણામાં ઝીણી બાબતોની સંભાળ લેવામાં આવી.

એક તરફ યજ્ઞના રજિસ્ટ્રેશનની જોર-શોરથી તૈયારી ચાલી રહી હતી, તો બીજી તરફ યજ્ઞમાં વિશાળ માત્રામાં જરૂરી સામગ્રીઓની તૈયારીઓ થઈ રહી હતી. આગ માટે ખૂબ જ સભાન અમેરિકા દેશના નિયમોને લક્ષ્યમાં રાખીને યજ્ઞમાં વાપરવાનાં હવિધ-લાકડાં અને અગ્નિ વગેરેનો પણ અભ્યાસ કરવામાં આવ્યો. સાથે સાથે યજ્ઞવિધાન પ્રમાણે આટલી મોટી માત્રામાં ડાંગર, જવ-તલ વગેરે એકત્રિત કરવામાં આવ્યું. છેક લુઝિયાના રાજ્યમાંથી ટ્રક દ્વારા યજ્ઞ માટેની ખાસ ડાંગર મંગાવવામાં આવી. આવી જ રીતે અન્ય સામગ્રી પણ ઠેર-ઠેરથી એકત્રિત કરવામાં આવી. તેમાં મોટાભાગની સામગ્રીઓ ભક્તો-ભાવિકોએ સેવામાં આપી.

વળી, દરેક યજમાન માટે આ સામગ્રીની કિટ તૈયાર કરવાનો પણ એક મહાયજ્ઞ હતો. બોસ્ટન સત્સંગ મંડળે યજ્ઞની સામગ્રીઓ ભરવાની સેવા ઉપાડી લીધી. સતત અઢી મહિના સુધી મહિલા મંડળે સાથ આપ્યો. હજારો યજમાનોના કાંડે બાંધવાની નાડાછડી પણ મહિલા મંડળે ભક્તિભાવથી ગૂંથી. ભારતથી આવેલી નાડાછડી ગૂંથાઈને એક ભવ્ય હારરૂપે પાછી ભારત મોકલવામાં આવી, ઠાકોરજી અને પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીને અર્પણ થઈને પ્રાસાદિક બની પાછી અમેરિકા આવી. સ્વામીશ્રીની એ પ્રાસાદિક નાડાછડી સૌને પ્રાપ્ત થઈ.

બીજી તરફ સ્થળ ઉપર યજ્ઞશાળાની પણ તૈયારીઓ ચાલી રહી હતી. આટલી મોટી સંખ્યામાં યજમાનોને સમાવતી યજ્ઞશાળા તૈયાર કરવાનો પણ એક પડકાર હતો. એ માટે કુલ ૮૦,૦૦૦ ચો. ફૂટનો વિશાળ શમિયાણો તૈયાર કરવામાં આવ્યો. ૪૮૦ ફૂટ લાંબો અને ૧૭૦ ફૂટ પહોળો એ વિશાળ સ્થંભરહિત મંડપ બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના ઇતિહાસમાં તો સૌથી મોટામાં મોટો મંડપ હતો, પરંતુ અમેરિકાના ઇતિહાસમાં એક દુર્લભ કહી શકાય તેવી બાબત હતી. આ વિશાળ યજ્ઞશાળામાં મૂર્તિ સ્થાપન અને મુખ્ય યજમાનો માટે ૮૦ × ૨૪ ફૂટનો મંચ તૈયાર કરવામાં આવ્યો અને કુલ ૨૩૧ યજ્ઞકુંડ રચવામાં આવ્યા. યજ્ઞશાળા અને દરેક કુંડને સુશોભનથી સજાવવામાં આવ્યા. યુવતી મંડળે તેમાં ખૂબ જહેમત ઉઠાવી.

આવી સતત ચાલતી તૈયારીઓનો આખરી દિવસ આવી ગયો. યજ્ઞપ્રારંભ થઈ ગયા પછી પણ યજ્ઞની તૈયારીઓ એક અઠવાડિયા સુધી ચાલવાની હતી. કારણ કે કુલ છ સત્રોમાં સતત બે દિવસ સવાર-સાંજ બે બે સત્રો યોજાયાં હતાં. બપોરે ૧૨:૩૦ વાગે એક સત્ર પૂરું થાય અને બપોરે ૨:૩૦ વાગે પુનઃ બીજું સત્ર શરૂ થઈ જાય. માત્ર બે જ કલાકના આ સમય દરમિયાન આટલી વિશાળ યજ્ઞશાળા નખશિખ સ્વચ્છ થઈ જાય, ફરીથી નવા રૂપરંગ અને સુશોભન સાથે યજ્ઞકુંડ સહિત યજ્ઞશાળા સજ્જ થઈ જાય ! એવા સૂક્ષ્મ આયોજન સાથે યુવતીઓ અને યુવાન સ્વયંસેવકોની એ સેવા નતમસ્તક બનાવી દે તેવી હતી. યજ્ઞ પૂર્વેનાં છેલ્લાં બે અઠવાડિયાં તો સૌએ દિવસ-રાત એક કરીને તમામ કાર્ય સંપન્ન કરી દીધું.

અને સૌના અદમ્ય ઉત્સાહ સાથે તા. ૧-૮-૨૦૧૪ના રોજ મધ્યાહ્ને પ્રથમ સત્ર આવી પહોંચ્યું.

પૂર્વે આપેલી સૂચનાઓ અને વ્યવસ્થાઓ અનુસાર તા. ૧-૮-૨૦૧૪ના રોજ ભારતીય સૌમ્ય પરિવેશમાં સજ્જ હરિભક્તો અક્ષરધામના વિશાળ પરિસરમાં આવવા લાગ્યા. અહીં પધારનાર પ્રત્યેક યજમાનને રજિસ્ટ્રેશન ડેસ્ક પરથી જ સ્મૃતિભેટ અને અન્ય જરૂરી સામગ્રી આપી દેવામાં આવતી હતી. ઇલેક્ટ્રોનિક ઓળખપત્ર અનુસાર તેમને તેમના યજ્ઞકુંડ સુધી પહોંચવામાં સ્વયંસેવકો તેમને દોરી જતા હતા. પ્રત્યેક કુંડ પર ૨૦ યજમાન બેસી શકે તેવા વિશાળ યજ્ઞકુંડ વિશિષ્ટ રીતે શણગારવામાં આવ્યા હતા. પ્રારંભમાં ભક્તિ-સંગીતની સૂરાવલીઓથી વાતાવરણમાં ભક્તિની અનેરી સુગંધ છવાઈ ગઈ. પૂજ્ય ત્યાગવલ્લભદાસ સ્વામી તથા અન્ય સંતોની ઉપસ્થિતિમાં યાજ્ઞિક પુરોહિતો વાસુદેવભાઈ શુક્લ અને શ્રી મૂકેશભાઈ શાસ્ત્રીએ

વૈદિક મંત્રોચ્ચારથી મહાયજ્ઞનો વિધિવત્ મંગલ પ્રારંભ કર્યો. સાથે સાથે મંદિર મહોત્સવના ઉપક્રમે સતત દસ દિવસ ચાલનારા વિવિધ કાર્યક્રમોનો પણ શુભારંભ થયો. પ્રારંભિક વિધિ બાદ, ત્યાગવલ્લભદાસ સ્વામીએ મંદિરમાં પ્રતિષ્ઠિત થનાર શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજ, શ્રી ઘનશ્યામ મહારાજ, શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજ, શ્રી રાધાકૃષ્ણ દેવ, શ્રી સીતારામજી, શ્રી હનુમાનજી, શ્રી લક્ષ્મણજી, શ્રી શિવ-પાર્વતી-ગણપતિજી-કાર્તિકેયજી તથા ગુરુપરંપરાની પ્રતિમાઓનું વેદોક્તવિધિથી પૂજન કર્યું. સાથે સાથે વોશિંગ્ટન ડી.સી. ખાતેના હરિમંદિરમાં પ્રસ્થાપિત થનાર શ્રી ઘનશ્યામ મહારાજની મૂર્તિનું પણ પૂજન કર્યું. હરિકૃષ્ણ મહારાજનું ધોડશોપયારથી પૂજન કરી, યજ્ઞનારાયણને અર્ધ્ય અર્પણ કર્યું. અંતે મૂર્તિઓની આરતી ઉતારી ત્યારે વાતાવરણમાં સર્વત્ર માંગલ્ય છવાઈ રહ્યું હતું.

આ પ્રસંગે પૂજ્ય ત્યાગવલ્લભદાસ સ્વામીએ ઉદ્બોધનમાં જણાવ્યું, ‘વિદેશની ધરતી પર વસેલા લાખો મનુષ્યોના કલ્યાણ માટે પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજે અમેરિકાની ધરતી પર રચેલા આ છઠ્ઠા શિખરબદ્ધ મંદિરના પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવમાં વિશ્વશાંતિ મહાયાગમાં આપ સહુ જોડાયા છો. આજે આપ સહુ યજ્ઞમાનો અહીં પધાર્યા તે ધન્યવાદને પાત્ર છે. આપણાં બહુ મોટાં ભાગ્ય છે કે પૂર્વનાં પુણ્યના પ્રતાપે આ અવસરમાં સહભાગી થવાની તક પ્રાપ્ત થઈ છે. પૂર્વે રાજા-મહારાજા અનેક પ્રકારના ફળ માટે યજ્ઞ કરતા, પરંતુ આપણે તો ભગવાનને રાજી કરવા તેમને સંભારી યજ્ઞમાં જોડાયા છીએ. આ તો બ્રહ્મયજ્ઞ છે, પ્રગટ બ્રહ્મને સંભારી યોગ-જ્ઞાનમાં જોડાઈએ તો મન-ઈન્દ્રિયો તેમાં સ્થિર થશે, ભવિષ્યની આધ્યાત્મિક પેઢીનું નિર્માણ કરવા માટે આ યજ્ઞ એ શ્રેષ્ઠ માધ્યમ છે. બાળકોને ભારતીય સંસ્કૃતિની અસ્મિતા થશે. ડગલે-પગલે મંદિર સંસ્કારનું સિંચન કરશે. આવા સ્થાનનું નિર્માણ પૃથ્વીનું આયુષ્ય ૧૦,૦૦૦ વર્ષ વધારશે. આપ સહુના પરિવારમાં મંદિર થકી પ્રગતિ થાય, અંતરમાં સુખ-શાંતિ વધે એ જ પ્રાર્થના.’

આ યજ્ઞમાં રોબિન્સવિલ નગરના મેયરશ્રી ડેવિડ ફીડ તથા અન્ય ઉચ્ચ અધિકારીઓએ પણ યજ્ઞનારાયણને આહુતિ અર્પણ કરી હતી. વિશ્વશાંતિ મહાયજ્ઞના પૂર્વાર્ધવિધિ બાદ સંતોએ યજ્ઞમંડપમાંથી વિદાય લીધી. અને ત્યારબાદ યજ્ઞનો મુખ્યવિધિ આરંભાયો. વિદ્વાન બ્રાહ્મણોના મુખેથી વૈદિક ઋચાઓનું ગાન થવા લાગ્યું. ભૂદેવોના કલ્પા પ્રમાણે યજ્ઞકુંડ પર બેઠેલા સર્વ યજ્ઞમાનો વિધિને અનુસરતા હતા. પ્રત્યેક યજ્ઞકુંડ પર ભારતીય પરંપરાગત સફેદ કુર્તા અને લાલ ધોતીમાં તાલીમબદ્ધ સ્વયંસેવકો પુરોહિતોના સહાયક રૂપે પૂજાવિધિ માટે યજ્ઞમાનોને માર્ગદર્શન આપતા હતા.

સમગ્ર પૂજનવિધિનું સમયાંતરે અમેરિકા તેમજ વિદેશી મુમુક્ષુઓ માટે અંગ્રેજી ભાષામાં અનુવાદ કરી વૈદિક ઋચાઓ, શ્લોક અને યજ્ઞવિધિનો મર્મ સમજાવવામાં આવી રહ્યો હતો.

વૈદિક ઋચાઓનાં ગાન, સમૂહ આરતી, જયઘોષના નાદ અને શ્રીફળની આહુતિ સાથે સંધ્યા સમયે યજ્ઞની પુર્ણાહુતિ થઈ. યજ્ઞની નાનામાં નાની વ્યવસ્થાઓમાં રખાયેલી ચીવટથી સૌ ખૂબ પ્રભાવિત હતા, પરંતુ આ તમામ યજ્ઞમાનોને આ મહાયજ્ઞની વિરલ સ્મૃતિરૂપે તેમનો ફોટોગ્રાફ સજાવીને ઇ-મેઈલ દ્વારા મોકલી આપવામાં આવ્યો ત્યારે સૌ વિશેષ પ્રભાવિત થયા હતા.

આ જ રીતે તા. ૨, ૩ ઓગસ્ટ ૨૦૧૪ દરમિયાન સવારે ૮:૩૦ થી ૧૨:૩૦ અને સાંજે ૨:૩૦ થી ૭:૦૦ વાગ્યા સુધી - એમ અન્ય ચાર યજ્ઞ-સત્રો યોજાયાં હતાં. અંતિમ સત્ર તા. ૮ ઓગસ્ટ, ૨૦૧૪ની સવારે પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીના રોબિન્સવિલ ખાતેના નિવાસ દરમિયાન યોજાયું હતું. આ સત્રમાં કુલ ૫,૦૦૦ જેટલા યજ્ઞમાનોએ યજ્ઞનારાયણને આહુતિ અર્પી હતી. આ યજ્ઞના પ્રારંભે પૂજ્ય મહંત સ્વામી તથા પૂજ્ય ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામી પણ જોડાયા હતા. તેમણે પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રી વતી આશીર્વાચન દ્વારા સૌ યજ્ઞમાનોને ધન્ય કર્યા હતા.

યજ્ઞવિધિમાં જોડાયેલા સર્વ યજ્ઞમાનોને બે ડીવીડી, શ્રી નીલકંઠવર્ણીની ઐતિહાસિક કલ્યાણયાત્રાનો કલાત્મક પેઈન્ટિંગ આલ્બમ ગ્રંથ અને પૂજનવિધિમાં રાખવામાં આવેલી છબિ સ્મૃતિરૂપે આપવામાં આવ્યાં હતાં.

આમ, અત્રે યોજાયેલા વિશ્વશાંતિ મહાયાગમાં નોર્થ અમેરિકા તેમજ દેશ-વિદેશના ૧૭,૫૬૬થી વધુ યજ્ઞમાનોએ અક્ષરધામના આ દિવ્ય પરિસરમાં યજ્ઞનારાયણને વધાવ્યા, સમર્પણના આ યજ્ઞમાંથી ઊઠતી માંગલિક ધૂમ્રસેરો સ્વામીશ્રીના દિવ્ય કાર્યનો સંદેશ સમગ્ર નબોમંડળમાં પ્રસારિત કરી રહી હતી ત્યારે, તેમણે ચીંધેલા માર્ગે ભારતીય સંસ્કૃતિના સનાતન વારસાને ચિરંતન રાખવાની પ્રેરણા સાથે સૌએ યજ્ઞમંડપમાંથી વિદાય લીધી હતી. ♦

ભારતીય ઉત્સવ પ્રણાલીની રંગબેરંગી પ્રસ્તુતિ સાથે યોજાઈ અપૂર્વ શોભાયાત્રા

મંદિર મહોત્સવની એક વિરલ સ્મૃતિ એટલે તા. ૮ ઓગસ્ટની સંધ્યાએ યોજાયેલી અભૂતપૂર્વ શોભાયાત્રા. યુગપુરુષ પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજે સર્જેલા શિખરબદ્ધ બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં બિરાજમાન થનાર દેવસ્વરૂપોની આ અપૂર્વ શોભાયાત્રા અક્ષરધામના વિશાળ પરિસરના મુખ્ય માર્ગ પર યોજાઈ હતી. તેમાં સહભાગી થવા માટે ૨૦,૦૦૦થી વધુ હરિભક્તો-ભાવિકો અક્ષરધામના પરિસરમાં હોંશે હોંશે ઊમટ્યા હતા. અક્ષરધામ પરિસરને ફરતા ચરણાકાર માર્ગની બંને બાજુ સ્વયંસેવકોએ ભારે જહેમત ઉઠાવી સ્ટેડિયમમાં બેઠા હોય એ રીતે સુંદર બેઠક વ્યવસ્થા કરી હતી.

આ શોભાયાત્રાની પૂર્વતૈયારીઓ છ મહિનાથી ચાલી રહી હતી. મહોત્સવના સુશોભન વિભાગના સ્વયંસેવકોએ ખૂબ જહેમત લઈને કલાત્મક દસ રથ અદ્ભુત રીતે સજાવ્યા હતા. લગભગ દોઢ કિલોમીટર લાંબી આ શોભાયાત્રા માટે સેંકડો બાળ-બાલિકાઓ, કિશોર-કિશોરીઓ, યુવાનો-યુવતીઓએ મહિનાઓની તાલીમ સાથે તૈયારીઓ કરી હતી.

સંધ્યા સમયે બરાબર ૬:૩૦ વાગે જય જયકારના નાદ સાથે મંદિરના પ્રાંગણથી શોભાયાત્રાનો વિધિવત્ શુભારંભ થયો. ‘મંદિર - જે દિવ્ય શાંતિની ગંગોત્રી છે...’ લખેલા વિશાળ બેનર સાથે શોભાયાત્રાએ પ્રસ્થાન કર્યું.

શોભાયાત્રામાં પ્રતિષ્ઠિત થનારાં દેવસ્વરૂપો વિવિધ રથ પર બિરાજમાન થયાં હતાં, જે સૌનાં આકર્ષણનું મુખ્ય કેન્દ્ર હતાં. શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજ મયૂરરથમાં બિરાજ્યા હતા, શ્રી ઘનશ્યામ મહારાજ કલાત્મક ઘુમ્મટરથમાં શોભતા હતા, શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજ સિંહરથમાં બિરાજમાન હતા, કલાત્મક રથમાં શ્રી રાધા-કૃષ્ણ બિરાજ્યાં હતાં, પંચવટીની સ્મૃતિ કરાવતા સુશોભિત કુટિર-રથમાં શ્રી રામ-પરિવાર અને કલાત્મક કેલાસરથમાં શ્રી શિવ-પરિવાર શોભતા હતા. આ ઉપરાંત કલાત્મક ગજરથમાં ભગતજી મહારાજ, શાસ્ત્રીજી મહારાજ, યોગીજી મહારાજ તથા પ્રમુખસ્વામી મહારાજની મૂર્તિઓ વિરાજમાન થઈ સૌ પર કૃપાદષ્ટિ વરસાવી રહી હતી. સૌ કોઈ મનોહર મૂર્તિઓનાં દર્શન કરીને ધન્ય બન્યા હતા. જુદા જુદા રથનું વહન હરિભક્તો, યુવકો, કિશોરો, મહિલાઓ, યુવતીઓ વગેરે ભક્તિભાવપૂર્વક કરી રહ્યા હતા.

સમગ્ર શોભાયાત્રાના પ્રારંભે રંગ-બેરંગી બાંધણીના સાફા બાંધેલા આઠ મોટરસાઈકલ સવારો બી.એ.પી.એસ.ના ધ્વજ લહેરાવી રહ્યા હતા. અગ્ર હરોળમાં બેન્ટલી ગાડીમાં હરિકૃષ્ણ મહારાજને લઈને કિશોરો કીર્તનો ગાતા હતા. સાઈકલ પર સવાર થઈ કિલ્લોલ કરતા બાળકો અને ત્યારબાદ ડલાસ કિશોર મંડળનું અક્ષરબંડ ભક્તિ-સંગીતની સૂરાવલીઓ રેલાવતું હતું, ભારત અને અમેરિકાના રાષ્ટ્રધ્વજ લઈને ચાલતા યુવકો બાદ આફ્રિકાના હરિભક્તો જોડાયા હતા. પરંપરાગત આફ્રિકન પહેરવેશમાં ‘જામ્બો...જામ્બો...’ના નાદ સાથે નૃત્ય કરતા યુવકો તથા બી.એ.પી.એસ.ના ધ્વજધારી ૧૦૦થી વધુ હરિભક્તો અનેરો આનંદ ઉપજાવતા હતા. દુનિયાના ૧૫થી વધુ દેશોના રાષ્ટ્રધ્વજ લઈને જયઘોષ કરતા હરિભક્તો સૌમાં જુસ્સો વધારી રહ્યા હતાં.

પછીનાં દૃશ્યોમાં બાળકો-કિશોરોએ પ્રભુત્વ જમાવ્યું હતું. ઝભ્ભો-લેંઘો અને ખભે પીળા રંગનો દુપટ્ટો ધારણ કરી જયનાદોથી ગગન ગજવતા બાળકો-કિશોરો; મંદિર-મહિમાનાં વિવિધ બેનર સાથે જયઘોષ કરતા કિશોરો; ડોક્ટર, વકીલ, વૈજ્ઞાનિક, ફૌજી જવાન જેવા અલગ અલગ કાર્યક્ષેત્રના પરિવેશમાં સજ્જ કિશોરો; માળા-આરતી, દીપ-અર્ચન વગેરે સાથે વિધિવિધાનોની અગત્યતા સમજાવતા બાળકો પરમહંસ પરિવેશમાં સૌનું ધ્યાન ખેંચતા હતા. રંગલો(શૂશ્રૂં) અને સ્ટેક ઉપર દસ ફૂટ ઊંચાઈએ ચાલતા બાળકો સૌને રમૂજ કરાવતા હતા. શોભાયાત્રાના માર્ગની બંને બાજુ બી.એ.પી.એસ. ધ્વજને લઈને શિસ્તબદ્ધ ચાલતા કિશોરો સંયમ અને શિસ્તનાં અનુપમ ઉદાહરણ બની શોભતા હતા.

‘મંદિર સંસ્કૃતિનું જતન કરે છે’ સંદેશના બેનર સાથે બાળકો અને મયૂરવેશમાં મયૂરપંખ ધારણ કરી નૃત્ય કરતા કિશોરોની સાથે ‘મારા સ્વામીની થાયે વાહ વાહ’ કીર્તનના ગાન સાથે નૃત્ય કરતી કિશોર મંડળી સૌને ઉત્સાહ આપતી હતી. ઉચ્ચ સ્વરે જયનાદ કરતો વિશાળ ભક્તસમુદાય બી.એ.પી.એસ.ના ધ્વજ લહેરાવી શોભાયાત્રાને અનુસરી રહ્યો હતો. પરંપરાગત ભારતીય પરિવેશમાં સજ્જ થઈ ભજન મંડળીઓ કીર્તન-ભક્તિની મધુર સૂરાવલિઓ રેલાવી રહી હતી. સંસ્થાના ટ્રસ્ટીઓ અને મંદિરોના કોઓર્ડિનેટર્સ પણ પારંપરિક વસ્ત્રો સાથે શોભાયાત્રામાં જોડાયા હતા.

મહિલાવૃંદ પણ શોભાયાત્રામાં આગવું આકર્ષણ ઉપજાવતું હતું. મસ્તક પર શ્રીફળ-જવારા-કળશ-પોથી લઈ ચાલતી મહિલાઓ; વિશિષ્ટ પરિવેશમાં ધ્વજ ફરકાવતી અને મંદિર-મહિમાનાં બેનર દર્શાવતી યુવતીઓ; શબરી, મીરાંબાઈ, લાધીબાઈ, સુવાસિની વગેરે ભક્તરત્નોના વેશ પરિધાનમાં શોભતી યુવતીઓ; વિવિધ રંગોની રિબન ઘુમાવતી અને રાસની રમઝટ જમાવતી બાલિકા-કિશોરીઓ; કીર્તનના તાલે સમૂહનૃત્ય કરતી બાલિકા-કિશોરીઓએ વાતાવરણમાં ભક્તિની સોડમ

પ્રસરાવી દીધી હતી.

જેમણે પોતાનાં વહાલસોયાં સંતાનોને સ્વામીશ્રીની ભગવી સેનામાં ભેળવી દીધાં છે એવી ગૌરવવંતી માતાઓ પણ આ શોભાયાત્રામાં જોડાઈ હતી. તેમના મુખેથી ઉચ્ચારાયેલા સ્વામિનારાયણ મહામંત્રના ધ્વનિથી વાતાવરણમાં લાગણીની ભીનાશ પથરાઈ ગઈ. પ્રાર્થનાનું ગાન કરતી બહેનો; ભારતના સાંસ્કૃતિક ઉત્સવોની સ્મૃતિ કરાવતી બહેનો; માથે કળશ ધારણ કરી નૃત્ય કરતી યુવતીઓ વગેરે સાથે વહેતી ભક્તિ-સૂરાવલિઓથી અક્ષરધામ પરિસર ગુંજી ઊઠ્યું હતું. આ શોભાયાત્રા રાત્રે ૮:૦૦ વાગે મંદિરના પ્રાંગણમાં વિરામ પામી.

આમ, આ શોભાયાત્રા અમેરિકાની ધરતી પર ભારતીય ભક્તિ પરંપરાની મહેક પ્રસરાવતી એક ઐતિહાસિક અવસર બની રહી... ♦

અન્ય પ્રેરક કાર્યક્રમો

સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ :

મંદિર મહોત્સવના ઉપક્રમે તા. ૮-૮-૨૦૧૪ના રોજ ઉત્તર-પૂર્વીય પ્રાંતના બાળકો, કિશોરો અને યુવકો દ્વારા શાનદાર સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમની પ્રસ્તુતિ થઈ. પૂજ્ય મહંત સ્વામી, પૂજ્ય ત્યાગવલ્લભદાસ સ્વામી, પૂજ્ય ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામી અને સંતોની ઉપસ્થિતિમાં યોજાયેલ આ કાર્યક્રમને માણવા દેશવિદેશના ૮,૦૦૦થી વધારે હરિભક્તો-ભાવિકો ઉપસ્થિત હતા.

મંદિર પરિસરમાં યોજાયેલ આ કાર્યક્રમનો ધૂન-પ્રાર્થનાના મંગલગાનથી પ્રારંભ થયો. કિશોરોએ ભારતીય પરિવેશમાં પારંપરિક ભક્તિનૃત્ય પ્રસ્તુત કરતાં જ સૌનાં હેયાં માતૃભૂમિની મહેકથી થનગની ઊઠ્યાં. સૌ હરિભક્તોએ તાળીઓના ગડગડાટ સાથે વધાવી લીધા. વિદેશની ભોગ ભૂમિ પર મંદિરોનો કેવો પ્રભાવ છે, મંદિરો દ્વારા ભારતીય પેઢીમાં સંસ્કૃતિ અને સંસ્કારોનું સિંચન, પોષણ અને સંવર્ધન થાય છે. મંદિરો સેવા, સંસ્કાર અને સત્પુરુષમાં જોડાણનું માધ્યમ છે. એવા કેન્દ્રવર્તી હેતુ સાથે હૃદયસ્પર્શી સંવાદ ‘મોક્ષ’ની પ્રસ્તુતિ થઈ.

સને ૧૯૮૧ના સી.એફ.આઈ. મહોત્સવથી માંડીને સને ૨૦૦૭ સુધીના પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના દિવ્ય વિચરણ અને પ્રચંડ પુરુષાર્થના નિદર્શનની વીડિયો ઝાંખી સાથેના રસપ્રદ સંવાદે સૌને અવર્ણનીય આનંદથી છલકાવી દીધા હતા.

આ પ્રસંગે પૂજ્ય મહંત સ્વામીએ ઉત્સાહ પ્રેરક આશીર્વાચન વહાવતાં જણાવ્યું કે, ‘આ સત્સંગ એક ખેતર છે, જેમાં મુમુક્ષુ હોય તે ઊગી નીકળે છે. આપણાં દીકરા-દીકરી સંસ્કારી થાય એવી ઈચ્છા અને ગરજ દરેક મુમુક્ષુએ રાખવાની છે. અહીં કિશોરો, યુવકો સત્સંગ કરે છે, કોલેજમાં રહી હિંમત રાખી તિલક-ચાંદલો કરે છે, નિયમધર્મ પાળે છે એ મોટો યજ્ઞ છે. સ્વામીશ્રીએ દાખડો કરીને, ભીડો વેઠીને આ સત્સંગ વધાર્યો છે, સત્સંગ સમાજ ઊભો કર્યો છે. પ્રમુખસ્વામી મહારાજ જેવા સત્પુરુષ દ્વારા મોક્ષનું દ્વાર ઉઘાડું થાય છે. સ્વામીશ્રીમાં દૃઢ પ્રીતિ થાય, આત્મબુદ્ધિ થાય એ આપણે કરવાનું છે.’

૧૪૭ કલાકની પ્રત્યક્ષ તાલીમ અને ૨૧૦ કલાકની ગુગલ હેન્ગઆઉટ દ્વારા તાલીમ લઈને ૧૩૦ થી વધારે બાળકો, કિશોરો અને યુવકોએ રજૂ કરેલો અદ્ભુત સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ ખરેખર સૌ માટે અજમોલ સંભારણું બની રહ્યો હતો.

સમૂહ વેવિશાળ અને લગ્નવિધિ :

આજીવન પરસ્પર સહયોગની પ્રતિજ્ઞા સાથે શરૂ થતા દાંપત્યજીવનનો ભારતીય હિન્દુ પરંપરામાં અનેરો મહિમા છે. આ દાંપત્યજીવનનો વિશેષ મહિમા સમજાવવાના હેતુ સાથે બી.એ.પી.એસ. સંસ્થા દ્વારા મંદિર મહોત્સવ ઉપક્રમે નવ યુગલોની સગાઈવિધિ તથા સમૂહ લગ્નનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. જેની કેટલીક વિગતો અહીં પ્રસ્તુત છે.

આ વેવિશાળ વિધિ પ્રસંગે તા. ૮-૮-૨૦૧૪ના રોજ સાંજે ૭:૩૦ કલાકે ત્યાગવલ્લભદાસ સ્વામી વગેરે સંતોની ઉપસ્થિતિમાં વૈદિક મંત્રોચ્ચાર સાથે સગાઈવિધિનો પ્રારંભ થયો હતો. આ વિધિના અંતે વેવિશાળ કરનાર યુવક-યુવતીઓના પિતાઓએ મહંતસ્વામી પાસે પધારીને સગાઈના નાળિયેરની આપ લે કરી હતી.

સગાઈવિધિની પૂર્ણાહુતિએ ‘અક્ષરવાટિકા’માં પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના આશીર્વાદ મેળવીને સૌએ ધન્યતા અનુભવી હતી. આમ, મંદિર મહોત્સવ ઉપક્રમે ૧૦ યુગલોએ સમૂહ સગાઈવિધિમાં જોડાઈને પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીના અંતરના આશિષ પ્રાપ્ત કર્યા હતા. વર-કન્યા પક્ષના મળીને કુલ ૧,૬૦૦ જેટલા આમંત્રિત મહેમાનોએ પણ નવ યુગલોને

શુભેચ્છા પાઠવી હતી.

મંદિર મહોત્સવ ઉપક્રમે ૧૮ નવદંપતીઓએ સમૂહલગ્નવિધિમાં જોડાઈને પ્રભુતામાં પગલાં માંડ્યાં હતાં.

તા. ૧૦-૮-૨૦૧૪ના રોજ વિદ્વાન બ્રાહ્મણોએ બરાબર ૩:૪૫ વાગ્યે લગ્નવિધિનો આરંભ કરાવ્યો. આ વિધિ દરમ્યાન લગ્નવેદીમાં આવતી તમામ વૈદિક વિધિઓનું સુંદર અર્થઘટન અંગ્રેજી ભાષામાં રજૂ કરવામાં આવતું હતું. જેના કારણે ઉપસ્થિત ભારતીયેતર પ્રજાને પણ ખૂબ રોમાંચ ઊપજતો હતો. એમાંય અગ્નિ દેવતાની સાક્ષીએ ચાર ફેરા, સપ્તપદી, હસ્તમેળાપ વગેરે વિધિઓને સૌએ ખૂબ ઉત્સુકતાપૂર્વક માણી હતી. ભારતીય લગ્ન પ્રથાનું આદર્શ ઉદાહરણ અહીં જોવા મળ્યું હતું. લગ્નવિધિ બાદ નવદંપતીએ મંદિરમાં ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણ તથા પ્રતિષ્ઠિત મૂર્તિઓનાં દર્શન કરીને આશીર્વાદ પ્રાપ્ત કર્યા હતા.

પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રી પણ મંદિરમાં પધારેલા હોવાથી નવદંપતીએ સ્ત્રી-પુરુષ મર્યાદા મુજબ પોતાના વિભાગોમાં રહી સ્વામીશ્રીનાં દર્શન-આશીર્વાદ પ્રાપ્ત કર્યાં હતાં. સ્વામીશ્રીનાં દર્શનથી ધન્ય થયેલા ૧૮ વરરાજાઓએ ભક્તિસંગીતના તાલે સ્વામીશ્રી સમક્ષ નૃત્ય કરીને વિશેષ સ્મૃતિ મેળવી હતી.

પ્રભુતામાં પગલાં માંડનાર આ પ્રત્યેક નવદંપતીની વિશેષતા એ હતી કે એ તમામ યુવક-યુવતીઓ મંદિર મહોત્સવ નિમિત્તે સ્વયંસેવક તરીકે પણ સેવામાં જોડાયાં હતાં. તેથી લગ્નવિધિના ગણતરીના કલાકો પૂર્વે પણ તેઓ પોતાના વિભાગમાં સેવામાં કાર્યરત રહ્યાં હતાં. વળી, લગ્નવિધિ બાદ પણ પોતાની સેવામાં ફરી જોડાઈને સ્વામીશ્રીનો રાજીપો પ્રાપ્ત કર્યો હતો.

પૂર્વ વિદ્યાર્થીઓનું સંમેલન :

બી.એ.પી.એસ. સંસ્થા દ્વારા ભારતમાં સંચાલિત છાત્રાલયોના પૂર્વ વિદ્યાર્થીઓ એવા અમેરિકામાં વસતા યુવાનોનું એક વિશિષ્ટ સંમેલન મંદિર મહોત્સવના ઉપક્રમે તારીખ ૯મી ઓગસ્ટ, ૨૦૧૪ના રોજ યોજવામાં આવ્યું હતું. કુલ ૫૪૦ જેટલા પૂર્વ વિદ્યાર્થીઓએ આ સંમેલનમાં ભાગ લીધો હતો.

બપોરે ૪ વાગે આ સંમેલનનો પ્રારંભ છાત્રાલયના પૂર્વ વિદ્યાર્થી સંતોએ સુમધુર ભક્તિપદોની રજૂઆતથી કર્યો હતો. વિવેકનિધિદાસ સ્વામીએ સ્વાગત પ્રવચન કરતાં પોતાનાં સંસ્મરણોની સ્મૃતિ કરી હતી. વિદ્યાર્થીઓએ પણ પોતાના સંસ્મરણો દ્વારા છાત્રાલયની સ્મૃતિઓને તાજી કરી હતી. છેલ્લા ચાર દાયકાથી વિદ્યાર્થીઓના સર્વાંગી વિકાસમાં છાત્રાલયનું કેવું યોગદાન છે એની વિવિધ માધ્યમો દ્વારા રજૂઆતો કરીને વિદ્યાર્થીઓએ પ્રેરણામૂર્તિ સ્વામીશ્રીનાં ચરણે ભક્તિઅર્ઘ્ય અર્પણ કર્યું હતું.

પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીએ ખાસ છાત્રોને યાદ કરીને શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજની સભામાં પધરામણી કરાવી. આ પ્રસંગે મહંત સ્વામીએ આશીર્વાદ આપતાં જણાવ્યું કે, ‘પૂર્વજન્મનાં બહુ મોટાં પુણ્ય હોય ત્યારે જ આ છાત્રાલયમાં રહીને અભ્યાસ કરવા મળે. નિયમ-ધર્મની વિશેષ દૃઢતા કરવાની છે, જો નિયમધર્મની દૃઢતા હશે તો સ્વામીબાપા આપની સાથે જ છે. ઉપાસનાની વાત બીજાને કરવાની છે. બીજાને સત્સંગની દૃઢતા થાય તો જ છાત્રાલયમાં અભ્યાસ કર્યો તે સાર્થક કહેવાય. સ્વામીશ્રીની મરજી, ઈચ્છા, અને આજ્ઞામાં રહેવું, અને ઉપાસના દૃઢ કરવાની છે અને બીજાને દૃઢતા કરાવવાની છે.’

અંતમાં સૌ વિદ્યાર્થીઓએ પૂજ્ય મહંત સ્વામી પાસેથી સ્મૃતિભેટ ગ્રહણ કરી. યોગાનુયોગ બી.એ.પી.એસ. છાત્રાલય-વિદ્યાનગરનું આ સુવર્ણજયંતી વર્ષ છે. તેથી આ સંમેલન સુવર્ણજયંતી વર્ષનું પણ એક સોપાન બની રહ્યું. ♦

જ્યારે પ્રમુખસ્વામી મહારાજે મૂર્તિનાં અંગઅંગમાં પરમાત્માનું આવાહન કર્યું...

અવસર મૂર્તિપ્રતિષ્ઠાનો...

વિક્રમ સંવત ૨૦૭૦, શ્રાવણ સુદ ૧૪ ને શનિવાર તા. ૯-૮-૨૦૧૪નો સૂર્યોદય ન્યૂજર્સી રાજ્યના રોબિન્સવિલ નગર ઉપર સુવર્ણ કિરણો પાથરી રહ્યો હતો. દાયકાઓથી તપશ્ચર્યા કરતી રોબિન્સવિલ નગરની ભાગ્યવંતી ભૂમિ પર પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજે સર્જેલા બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં મૂર્તિઓના દ્વિદિવસીય પ્રાણપ્રતિષ્ઠા વિધિના ઉપક્રમે આજે મહાઅભિષેક યોજાયો હતો.

માંગલિક મુહૂર્તમાં સવારે ૭:૦૦ વાગ્યે પારંપરિક વસ્ત્રો પરિધાન કરીને યજમાન હરિભક્તો મંદિરના વિશાળ છત્ર તળે પોતાના સ્થાન પર બિરાજમાન થઈ ગયા હતા. મહિલાવૃંદ પણ મંદિરના બાહરી મંડોવર સમક્ષ સ્થાન લઈ વિધિમાં જોડાયાં

હતું. પ્રાતઃકાળે બરાબર ૭:૩૦ વાગ્યે પૂજ્ય મહંત સ્વામી, પૂજ્ય ત્યાગવલ્લભદાસ સ્વામી તથા પૂજ્ય ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામી વગેરે વરિષ્ઠ સંતોના હસ્તે વિદ્વાન પુરોહિતોએ પ્રારંભિક મહાપૂજા વિધિ શરૂ કરાવી દીધો. વેદોક્ત વિધિપૂર્વક પૂજન અને આરતી સંપન્ન થયા બાદ આજે મૂર્તિઓ પર થનારા મહાઅભિષેક માટે ૧૦૮ પવિત્ર તીર્થો-સરોવરો-નદીઓનાં જળ ભરેલાં કળશનું પણ પૂજન કરવામાં આવ્યું. ત્યારબાદ પૂજ્ય મહંત સ્વામી અને પૂજ્ય ત્યાગવલ્લભદાસ સ્વામીએ સૌને પ્રેરક સત્સંગલાભ આપ્યો.

બરાબર ૯:૦૦ વાગે ગર્ભગૃહનાં કાષ્ઠદ્વાર ખૂલ્યાં, મંદિરનાં વિશાળ ઘુમ્મટ-મંડપોમાં બિરાજમાન હરિભક્તોને પ્રતિષ્ઠા-અભિષેક વિધિ માટે ગર્ભગૃહમાં પધારેલા પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજનાં દર્શન થયાં, સૌનાં હરખનો પાર ન રહ્યો. જયનાદોથી સૌએ મંદિર ગજવી મૂક્યું. સૌ હરિભક્તો પર કૃપાદષ્ટિ કરતાં કરતાં સ્વામીશ્રી ધનશ્યામ મહારાજના ખંડમાંથી મધ્યખંડમાં પધાર્યા. આજે સ્વામીશ્રીનાં કરકમળો દ્વારા મહાઅભિષેક યોજાયો હતો. તેના પ્રતીકરૂપે નાનો કલાત્મક સ્વર્ણિમ કળશ હાથમાં ધારણ કરીને સ્વામીશ્રી સૌ પર કૃપા-અભિષેક કરતા હોય તેમ પ્રસન્ન મુદ્રામાં કળશ દર્શાવવા લાગ્યા. સૌએ કૃપાનો એ અભિષેક જીલી લીધો.

ત્યારબાદ કલાત્મક સિંહાસનમાં બિરાજમાન શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજની મૂર્તિ સન્મુખ પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીએ ઠાકોરજી શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજનું વેદોક્તવિધિ પૂર્વક પૂજન કર્યું. વૈદિક મંત્રોચ્ચાર વચ્ચે સ્વામીશ્રીએ તમામ નદીઓનાં જળનાં સંગમરૂપે ભરેલાં સ્વર્ણિમ કળશ દ્વારા હરિકૃષ્ણ મહારાજ પર ખૂબ ભક્તિભાવપૂર્વક અભિષેક કર્યો. ત્યારબાદ પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીએ શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજને અક્ષત-પુષ્પોથી વધાવ્યા અને રિમોટ કંટ્રોલની સ્વિચ દબાવી તે સાથે જ અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજના મસ્તક પર શોભતા સ્વર્ણિમ છત્રમાંથી ૧૦૮ તીર્થોનું તીર્થોદક અભિષેક રૂપે વહેવા લાગ્યું. સૌ આ દર્શનથી ધન્ય થઈ ઊઠ્યા.

આ દરમ્યાન શ્રી ધનશ્યામ મહારાજની મૂર્તિ સન્મુખ પૂજ્ય મહંત સ્વામી, શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજની મૂર્તિ સન્મુખ પૂજ્ય ત્યાગવલ્લભદાસ સ્વામી, શ્રી રાધાકૃષ્ણદેવની મૂર્તિ સન્મુખ પૂજ્ય ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામીએ પધારી વેદોક્તવિધિપૂર્વક પૂજન-અભિષેકવિધિ કર્યો હતો.

આ પ્રસંગે તમામ મૂર્તિઓની પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીએ આરતી ઉતારી, સૌને અંતરના આશીર્વાદ પાઠવ્યા હતા. સ્વામીશ્રીની આજ્ઞાથી પ્રતિષ્ઠાવિધિમાં ઉપસ્થિત સર્વે હરિભક્તોએ અભિષેકનો લાભ લીધો હતો. આ રીતે મૂર્તિપ્રતિષ્ઠાવિધિનો પૂર્વાર્ધ-અભિષેકવિધિ સંપન્ન કરીને સ્વામીશ્રી અક્ષરવાટિકાના ખુલ્લા પ્રાંગણમાં પધાર્યા.

પ્રાસંગિક સમારોહ :

આજના અવસરે અક્ષરવાટિકાના પ્રાંગણમાં ૨૦,૦૦૦થી વધુ ભક્તોનો માનવમહેરામણ ઊમટ્યો હતો. સૌના હેયે મંદિરનાં દર્શન કરવાનો થનગનાટ હતો. સાથે સાથે પ્રાણધ્યારા ગુરુહરિને વધાવવા પણ એટલી જ ઉત્સુકતા હતી.

આ પ્રસંગે હવાઈટાપુ સ્થિત હિમાલયન એકેડેમીના પ્રતિનિધિ શ્રી પરમાચાર્ય સદાશિવનાથ સ્વામી તથા શ્રી શેન્ચીલનાથ સ્વામી પધાર્યા હતા.

મંદિરનો મહિમા અને અસ્મિતા દઢાવતા નૃત્યગીત ‘મંદિરમ્ મંદિરમ્ મંદિરમ્, સ્વામિનારાયણ મંદિરમ્’ના તાલે યુ.એસ.એના નોર્થ-ઈસ્ટ પ્રાંતના બાળકો-કિશોરોએ ઉપસ્થિત મહાનુભાવો તથા ભક્તમેદનીનું ભાવભીનું સ્વાગત કર્યું. નૃત્ય બાદ શિશુ અને બાળમંડળના બાળકોએ શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમ અને ગુરુમહિમાના વૈદિક મંત્રોનું ગાન કરીને સમગ્ર પરિસરને વેદકાલીન વાતાવરણમાં ગરકાવ કરી દીધું.

‘અક્ષરધામ’ નિર્માણકાર્યના સંયોજક પૂજ્ય ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામીએ મંદિરના બાંધકામની આગવી વિશેષતાઓ તથા મંદિર રચનાની સુંદર છણાવટ કરી. સાથે સાથે ‘અક્ષરધામ મહામંદિર’ની સુંદરતા અને ભવ્યતાથી સૌ હરિભક્તોને માહિતગાર કરી અક્ષરધામના નિર્માણકાર્યમાં તન-મન-ધનથી જોડાવાનું આવાહન કર્યું હતું. પોતાની હૃદયોર્મિઓ વહાવતાં પ્રસિદ્ધ લોકનેતા અને કૌંગ્રેસમેન ફ્રેન્ક પલોને (જર્મીન બ્રિશ્ચર્ફ) જણાવ્યું કે ‘મેં ક્યારેય અને ક્યાંય પણ આવું સુંદર નકશીકામવાળું અને મંત્રમુગ્ધ કરતું ધર્મસ્થાન જોયું નથી. હિન્દુ ધર્મ જગતને સહનશીલતા, શાંતિ અને અહિંસાનો સુંદર સંદેશ આપે છે. આ ધર્મસ્થાન અને સંસ્થા આધ્યાત્મિકતાની સાથે સમાજસેવાનો પણ સંદેશ આપે છે. ન્યૂજર્સિમાં આવું ધર્મસ્થાન હોવું એ આશીર્વાદરૂપ છે. હું અહીં અવારનવાર આવતો રહીશ.’

પૂજ્ય મહંત સ્વામીએ આશીર્વચન વહાવતાં જણાવ્યું કે, ‘પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ નાદુરસ્ત તબિયત હોવા છતાં

પણ અતિશય કરુણા કરીને અહીં પધાર્યા છે. સ્વામીશ્રીએ અક્ષરધામ-નિર્માણનો ગોવર્ધન પર્વત ઉપાડ્યો છે, એમાં આપણે ટેકો આપવાનો છે. ભગવાન ભગવાનનું કાર્ય કરે છે, એમાં આપણે ભગવાનું છે.’

બરાબર સવારે ૧૧:૨૦ વાગે સ્વામીશ્રી બી.એ.પી.એસ. યુવક મંડળ ડલાસના ‘અક્ષરબૅંડ’ની સુમધુર સંગીત સૂરાવલીઓ વચ્ચે અક્ષરવાટિકા સ્થિત મંચ પર પધાર્યા. સમગ્ર પરિસર જયનાદોથી ગુંજી ઊઠ્યું. પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીના આગમન સાથે જ વાતાવરણમાં જાણે વિદ્યુતનો સંચાર થયો હોય તેમ સૌ દર્શન-ભક્તિમાં ગુલતાન બની ગયા. સ્વામીશ્રીના દર્શનનું ફળ એજ આજના મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા-અભિષેકવિધિનું જાણે દિવ્ય ફળ પ્રાપ્ત થયું હોય તેમ સૌ ધન્યતાથી ઝૂમી ઊઠ્યા. વડીલ સંતોએ પુષ્પહાર અર્પણ કરી સ્વામીશ્રીને વધાવ્યા. સન ૧૯૯૮માં પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીના હૃદયની બાયપાસ સર્જરી કરનાર ડૉ. વી. એ. સુબ્રહ્મણ્યમ્થી લઈને અન્ય વિખ્યાત ડૉક્ટરો પણ આજે સભામાં ભક્તસમુદાય વચ્ચે ઉપસ્થિત હતા. સ્વામીશ્રીની સમયે સમયે વિવિધ સારવાર કરનાર એ તમામ તબીબોનું સંસ્થા વતી સંતોએ પુષ્પહાર પહેરાવી સન્માન કર્યું. સ્વામીશ્રીએ પણ સૌ પર કૃપાદષ્ટિ વરસાવી આશીર્વાદ આપ્યા.

આજના મૂર્તિસ્થાપન વિધિના પાવન પ્રસંગે પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીએ પોતાની હૃદયભાવનાને પૃષ્ઠ ઉપર અંકિત કરતાં લખ્યું કે, ‘અહીંયાં જે કોઈ આવશે તેનું કલ્યાણ થશે, આ અક્ષરધામ સૌના જીવનઘડતર માટેનું સ્થાન છે.’

આજે મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા મહોત્સવના ઉપક્રમે બપોરે ૩ થી ૬ દરમિયાન વિશાળ સભામંડપમાં અદ્ભુત મહિલા સંમેલન પણ યોજાયું હતું, જેમાં ભારતીય સંસ્કૃતિના શાશ્વત વારસાની પ્રેરણા આપતો અપૂર્વ કાર્યક્રમ પ્રસ્તુત થયો હતો. અમેરિકાનાં જુદાં જુદાં ૨૪ સત્સંગકેન્દ્રોનાં ૫૦૦ જેટલાં બાલિકાઓ, કિશોરીઓ, યુવતીઓ અને પ્રેમવતી બહેનોએ આ સંમેલનમાં સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમની શાનદાર પ્રસ્તુતિ કરી સૌનાં મન હરી લીધાં હતાં. હૃદયસ્પર્શી, મનમાં ઉદ્ભવતા દરેક પ્રશ્નોના જવાબ આપતા, એક ઉચ્ચ વર્ગમાં વસતા મહિલા માટે, મહિલાઓ દ્વારા રજૂ થયેલ આ એક અદ્ભુત આ સંવાદે સૌ બહેનોમાં એક નૂતન બળ સિંચ્યું હતું. આ મહિલા સંમેલનમાં કુલ ૬,૦૦૦ કરતાં વધારે મહિલાઓએ ભાગ લીધો હતો. (વિશેષ માહિતી માટે જુઓ ‘પ્રેમવતી’ અંક : સપ્ટેમ્બર, ૨૦૧૪)

સંધ્યા સમયે પુનઃ અક્ષરવાટિકામાં સત્સંગ સમારોહ યોજાયો અને ઉપસ્થિત ૨૦,૦૦૦ કરતાં વધુ ભક્તોની વિશાળ મેદનીને દિવ્ય લાભ આપવા માટે સ્વામીશ્રી મંચ પર પધાર્યા. આજે ૨૦,૦૦૦ હરિભક્તોએ અને સંતોએ સમૂહ આરતીથી ઠાકોરજી અને સ્વામીશ્રીને વધાવ્યા ત્યારે જાણે નભમંડળ નીચે ઊતરી આવ્યું હોય તેવું અદ્ભુત દૃશ્ય ખડું થયું હતું. આજે મંદિરના સભાગૃહમાં સમૂહ વેવિશાળ સમારોહ પણ યોજાયો હતો. સભામાં પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીએ વાક્યાનથી બંધાયેલા નવયુવાનો પર આશીર્વાદ વરસાવ્યા હતા.

આમ, વહેલી સવારથી શરૂ થયેલી આજના દિવસની ઉત્સવયાત્રા આવતીકાલના ચરમસીમા સમા દિનની પ્રતીક્ષામાં અલ્પવિરામ પામી.

પ્રાણપ્રતિષ્ઠા દિન :

આજે સંવત ૨૦૭૦ શ્રાવણ સુદ પૂર્ણિમા, તા. ૧૦-૮-૨૦૧૪નો દિન અને રક્ષાબંધનનો પવિત્ર ઉત્સવ. એક તરફ આકાશમાં પૂર્ણ ચંદ્ર ખીલ્યો હતો તો બીજી તરફ હજારો હરિભક્તોના હૃદયમાં ભક્તિનો મહેરામણ ભરતીએ ચઢ્યો હતો. કારણ કે આજે અમેરિકાના હિન્દુ ધર્મના ઇતિહાસમાં એક સુવર્ણપૃષ્ઠ ઉમેરાઈ રહ્યું હતું – અક્ષરધામ પરિસરમાં શિખરબદ્ધ બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના હસ્તે દિવ્ય પ્રાણપ્રતિષ્ઠા વિધિ. યોગાનુયોગ આજથી ૪૦ વર્ષ પહેલાં સન ૧૯૭૪માં રક્ષાબંધનના આ જ પવિત્ર પર્વે પ્રમુખસ્વામી મહારાજના વરદ હસ્તે ન્યૂયોર્કમાં એક નાના ઓરડામાં પ્રથમ બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ મંદિર સ્થપાયું હતું. આજે અમેરિકા ખંડમાં રક્ષાબંધનના પવિત્ર પર્વે ૮૫મું મંદિર તેઓશ્રીના જ વરદ હસ્તે સ્થપાઈ રહ્યું હતું. આજે મંદિર-મહોત્સવનો ચરમસીમા સમો દિન હતો – રક્ષાબંધન, પ્રમુખસ્વામી મહારાજનાં કરકમળો દ્વારા મંદિરનો મુખ્ય પ્રાણપ્રતિષ્ઠા વિધિ અને એમાંય પાછો રવિવાર, એટલે આ ત્રિવેણી સંગમને માણવા માટે હજારો ભક્તો અમેરિકા અને વિભિન્ન દેશોમાંથી ઊમટી રહ્યા હતા. વહેલી સવારથી જ અક્ષરધામ પરિસર તરફ ઉત્સાહભર્યા હજારો ભક્તોની વણઝાર વહી રહી હતી. રોબિન્સવિલ નગરમાં વસતા ૧૪,૦૦૦ નાગરિકોને પણ અચરજ હતું કે આજે આટલો માનવ સમૂહ અહીં ક્યાંથી આવી રહ્યો છે ! કારણ, નગરની વસ્તી કરતાં વધુ આશરે ૨૫,૦૦૦ જેટલા ભક્તો-ભાવિકોનો સમૂહ અહીં ઉપસ્થિત હતો. પરિસરની ૧૬૭ એકર ભૂમિનો ખૂણે-ખૂણો ભક્ત-મહેરામણથી ધબકી રહ્યો હતો.

યજમાન ભક્તોએ પારંપરિક વસ્ત્રો પરિધાન કરીને માંગલિક પ્રાતઃમુહૂર્તમાં ૭:૩૦ વાગ્યે મંદિરમાં પોતાનું સ્થાન લઈ લીધું હતું. વિદ્વાન પુરોહિતોએ પૂજ્ય મહંત સ્વામી, પૂજ્ય ત્યાગવલ્લભદાસ સ્વામી, પૂજ્ય ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામી વગેરે સંતોની ઉપસ્થિતિમાં મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા વિધિનો પ્રારંભ કરાવી દીધો હતો. મંદિરની બહાર વિશાળ અક્ષરવાટિકામાં હજારો ભક્તો વિશાળ એલ.ઈ.ડી. સ્ક્રીનના માધ્યમથી આ વિધિને માણી રહ્યા હતા.

આજે ઊમટેલા વિશાળ ભક્તસમુદાયને દર્શનદાન દેવા માટે બરાબર ૮:૧૫ વાગ્યે પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રી અક્ષરવાટિકામાં પધાર્યા. વાતાવરણ કંઈક અલૌકિક હતું. રક્ષાબંધનની આવી પવિત્ર પ્રભાતે ભવભવની ભટકણથી રક્ષા કરનારા પ્રાણપ્યારા ગુરુહરિ પ્રમુખસ્વામી મહારાજનાં દર્શનથી સૌનાં અંતરમાં પ્રાર્થનાઓનો પ્રવાહ વહેવા લાગ્યો. ધન્યતા અને કૃતાર્થતાની અનુભૂતિ સાથે સૌ કોઈ રોમાંચિત થઈ ઊઠ્યા. આજના રક્ષાબંધન ઉત્સવની વિશિષ્ટ સ્મૃતિ અર્પિને સ્વામીશ્રી ૮:૪૫ વાગ્યે મંદિરના ગર્ભગૃહમાં પધાર્યા. મંદિરના મંડપ તળે બિરાજેલા સૌ ભક્તો પર અમીદષ્ટિ કરતાં, સ્મિત રેલાવતાં સ્વામીશ્રી શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજના ખંડમાં પધાર્યા.

વિદ્વાન ભૂદેવોના મુખેથી વહેતા વેદમંત્રોના ગાન સાથે સ્વામીશ્રીએ મધ્યખંડમાં બિરાજમાન શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજની મૂર્તિઓના પ્રાણપ્રતિષ્ઠાવિધિનો આરંભ કર્યો. સ્વામીશ્રીએ લાંબી સુવર્ણશલાકા વડે અંગન્યાસ, કરન્યાસ, પ્રાણ-આહવાન વગેરે વિધિઓ કરીને મૂર્તિઓનો નેત્રોન્મિલન વિધિ કર્યો. ત્યારબાદ આદર્શનિવેદનમ્ થયું ત્યારે પરબ્રહ્મ પરમાત્માની પ્રથમ દિવ્ય દૃષ્ટિના તેજને ઝીલવા સ્વામીશ્રીએ દર્પણ ધર્યો અને સર્વત્ર ‘સ્વામિનારાયણ’ મહામંત્રનો નાદ ગુંજી ઊઠ્યો. આમ, સ્વામીશ્રીના હસ્તે મધ્ય મંદિરમાં અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજ પ્રતિષ્ઠિત થઈ ગયા. સૌએ ગગનભેદી જયનાદો સાથે ઠાકોરજીને વધાવી લીધા.

મધ્ય ખંડની તમામ વિધિને અનુસરીને મહંત સ્વામી, ત્યાગવલ્લભદાસ સ્વામી, ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામી તથા અન્ય સંતો સમાંતર પણે આ વિધિ કર્યો હતો. શ્રી ધનશ્યામ મહારાજ સન્મુખ મહંત સ્વામી, શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજ સન્મુખ ત્યાગવલ્લભદાસ સ્વામી અને શ્રી રાધાકૃષ્ણદેવ સન્મુખ ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામીએ પૂજનવિધિ કર્યો હતો. ગુણાતીત ગુરુપરંપરા અને શિવપરિવાર-રામપરિવારના ખંડોમાં અન્ય સંતોએ આ વિધિનું અનુસરણ કર્યું હતું. તમામ સ્વરૂપોના પ્રતિષ્ઠાવિધિ બાદ સ્વામીશ્રીએ તમામ ખંડોમાં પધારીને નાડાછડીથી મઢેલી દીર્ઘ પૂજન-શલાકા વડે મૂર્તિઓનું ચંદન-અર્ચન કર્યું હતું. ત્યારબાદ ઠાકોરજી સમક્ષ અન્નકૂટ રચાયો અને સ્વામીશ્રીએ પ્રથમ આરતી ઉતારી રોબિન્સવિલની ધરતી પર ચિરંતન સમય સુધી બિરાજમાન થયેલા ઠાકોરજીને વધાવ્યા હતા. ઠાકોરજીની મંત્રપુષ્પાંજલિ બાદ મહંત સ્વામીએ સ્વામીશ્રીને સમગ્ર બી.એ.પી.એસ. પરિવાર વતી હાર પહેરાવ્યો અને કરમાં રાખડી બાંધી હતી. ત્યાગવલ્લભદાસ સ્વામી અને ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામીએ કલાત્મક ચાદર ઓઢાડી કૃતજ્ઞતા વ્યક્ત કરી હતી.

આજના દિવસે પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીએ તમામ ભક્તોને મળવાની ખૂબ ઈચ્છા દર્શાવી હતી. પણ, સ્વામીશ્રીના સ્વાસ્થ્યને લક્ષ્યમાં રાખીને તે અશક્ય હતું. તેથી સ્વામીશ્રીએ અક્ષત મંગાવીને સૌ ભક્તો પર આશીર્વાદ રૂપે તેની વર્ષા કરી હતી. આટલાથી સંતોષ ન થતાં સ્વામીશ્રીએ મહંત સ્વામી, ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામી અને ત્યાગવલ્લભદાસ સ્વામીને પાસે બોલાવીને તેમના હાથમાં અક્ષત આપીને દૂર બેઠેલા સૌ ભક્તો પર તેનો અભિષેક કરવાની આજ્ઞા કરી હતી.

અંતમાં સૌ ભક્તોનાં સમર્પણ અને ભક્તિભાવથી પ્રસન્ન થયેલા સ્વામીશ્રીએ આશીર્વચન ઉચ્ચારીને સૌને કૃતાર્થ કર્યા હતા. આશીર્વચન આપતી વેળાએ સ્વામીશ્રીએ સૌપ્રથમ મંદિરની અદ્ભુત શોભા નીરખતાં બે હાથ ઊંચા કર્યા અને વિસ્ફારિત નયને મંદિરની ભવ્યતા અને દિવ્યતા અંગે અપાર પ્રસન્નતા વ્યક્ત કરીને સ્મિત રેલાવ્યું હતું. ત્યારબાદ સ્વામીશ્રીએ ઉચ્ચ સ્વરે સૌને જય સ્વામિનારાયણ કહ્યા અને આશીર્વચન ઉચ્ચાર્યા કે, ‘મહારાજને પ્રાર્થના કરીએ છીએ કે બધા હરિભક્તો સુખિયા થાય, બધાના દેશકાળ સારા થાય.’

આમ, મંદિરમાં ભગવત્સ્વરૂપો પ્રતિષ્ઠિત કરીને સૌ ભક્તો પર કૃપાવર્ષા રેલાવીને પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રી નિજનિવાસે પધાર્યા અને સંતો-ભક્તો આજના પ્રસંગને હૃદયસ્થ કરીને મંદિર મહોત્સવના શાનદાર સમારોહમાં પધાર્યા.

ઉત્તરાર્ધ મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા સભા :

અક્ષરધામ પરિસરમાં કુલ ૮૦,૦૦૦ ચોરસ ફૂટનો વિશાળ શમિયાણો મંદિર મહોત્સવના મુખ્ય સમારોહનો સાક્ષી બનવા સજ્જ હતો. આટલો વિશાળ સ્તંભરહિત સભામંડપ તો ભક્તમેદનીથી ચિત્કાર હતો, પરંતુ સાથે સાથે મંદિરના પરિસરમાં પણ ઠેર ઠેર ભક્તમેદની સી.સી. ટી.વી. કે પ્રોજેક્શનના માધ્યમથી સભાગૃહના કાર્યક્રમો માણતી બેઠી હતી.

બરાબર ૧૧:૦૦ કલાકે વિશાળ શમિયાણામાં મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા સભાનો પ્રારંભ થયો. પૂજ્ય મહંત સ્વામી, પૂજ્ય ત્યાગવલ્લભદાસ સ્વામી, પૂજ્ય ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામી વગેરે વરિષ્ઠ સંતો મંચ પર આસનસ્થ થયા હતા. હજારો હરિભક્તો ઉપરાંત અગ્રણી મહાનુભાવો પણ સભામાં પધારી ચૂક્યા હતા. મહોત્સવ મંચની પશ્ચાદ્ભૂમાં મંદિરનાં ઉતુંગ શિખરો તથા કલાત્મક કમાનો શોભી રહ્યાં હતાં. મંચ-મધ્યે શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજના આસનની સમક્ષ બિરાજમાન પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીની પૂર્ણ કદની પ્રતિમા તેમની દિવ્ય ઉપસ્થિતિની અનુભૂતિ કરાવતી હતી.

આજના અવસરને વધાવવા મેરીલેન્ડ રાજ્યના પ્રસિદ્ધ લોકનેતા અને કૌંગ્રેસમેન સ્ટેની હોયર, ન્યૂજર્સી રાજ્યના સેનેટર શ્રી કોરી બુકર વગેરે સહિત અમેરિકાના અનેક પ્રતિષ્ઠિત મહાનુભાવો પણ ઉપસ્થિત હતા. રોબિન્સવિલના મેયર ડેવિડ ફ્રિડ વતી શ્રી ટીમ મેકગાઉથ (ડાઈરેક્ટર ઓફ કમ્યુનિટી એન્ડ ઇકોનોમિક ડેવલપમેન્ટ) તેમજ અમેરિકામાં વસતા ભારતીય અગ્રણીઓ પણ ઉપસ્થિત હતા.

સમારોહનો પ્રારંભ થયો — વૈદિક મંત્રગાનથી. યુ.એસ.એ.ના ઉત્તર-પૂર્વ પ્રાંતના બી.એ.પી.એસ. બાળ સત્સંગ કેન્દ્રોના બાળકોના મુખેથી વહેતા મંત્રગાનથી જાણે વૈદિક યુગમાં સરી ગયા હોય તેવો સૌને અનુભવ થયો.

મેરીલેન્ડ રાજ્યના પ્રસિદ્ધ લોકનેતા કૌંગ્રેસમેન સ્ટેન્લી હોયરે પોતાની ભાવોર્મિઓ વ્યક્ત કરીને ઉદ્બોધન કરતાં જણાવ્યું હતું કે, ‘ખરેખર આ મંદિર કેવળ આરાધનાનું જ સ્થાન નહીં, પરંતુ સેવાનું વિરલ કેન્દ્ર બની રહેશે. ‘બીજાના ભલામાં આપણું ભલું’ એ પ્રમુખસ્વામી મહારાજનો જીવનમંત્ર અહીં મૂર્તિમાન થતો જોવા મળે છે. સમગ્ર વિશ્વમાં લાખો લોકોનાં કલ્યાણ માટે આ સંસ્થાએ નિઃસ્વાર્થ સેવા કરી છે.’

ત્યારબાદ ન્યૂજર્સી રાજ્યના સેનેટર કોરી બુકરે જણાવ્યું હતું કે, ‘આજે સાચા અર્થમાં અમારા માટે ઉત્સવનો દિવસ છે. આજનો દિવસ એ કેવળ આ સ્થાન માટે કે પછી ન્યૂજર્સી રાજ્ય માટે જ શુભ દિવસ નથી, પરંતુ સમગ્ર અમેરિકા દેશ માટે છે. બી.એ.પી.એસ.નું આ કાર્ય ખરેખર મહાન છે. હું પ્રભાવિત થયો છું, અતિ પ્રભાવિત થયો છું. હું અંતઃકરણ- પૂર્વક આ અજોડ મંદિર પ્રત્યે મારો આદર પ્રગટ કરું છું કે જે સમગ્ર નોર્થ અમેરિકામાં શ્રદ્ધાના મહાન કેન્દ્ર તરીકે આગવું સ્થાન પ્રાપ્ત કરશે. હું આપની બી.એ.પી.એસ. સંસ્થાથી ઘણો આકર્ષિત થયો છું.’

ત્યારબાદ બી.એ.પી.એસ. બાળ-કિશોર વૃંદે મંદિરનો મહિમા દઢાવતું ભક્તિનૃત્ય ‘મંદિરમ્ મંદિરમ્ સ્વામિનારાયણ મંદિરમ્’ રજૂ કર્યું હતું. આજના પ્રસંગે ઉપસ્થિત રાજકીય મહાનુભાવોને પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રી વતી વરિષ્ઠ સંતોએ સત્કાર્યા હતા. ત્યારબાદ ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામીએ પ્રેરક વચનો દ્વારા મંદિર બાંધકામની વિશેષતા વર્ણવી હતી. વધુમાં તેઓએ અહીં ભવિષ્યમાં રચનાર અક્ષરધામ મહામંદિરની ભવ્યતા અને સુંદરતાનું વર્ણન કરીને સૌ ભક્તોને તન, મન, ધનથી આ સેવા કાર્યમાં જોડાવા માટે બળ પ્રેર્યું હતું.

મંદિર નિર્માણમાં સેવા આપનાર શિલ્પીઓ તથા સમગ્ર મંદિર મહોત્સવ દરમ્યાન વિવિધ સેવા કરનાર ભક્તોને વરિષ્ઠ સંતોએ સત્કાર્યા હતા. સમગ્ર ઉત્તર-પૂર્વ અમેરિકા સત્સંગ મંડળ વતી યજ્ઞવલ્લભદાસ સ્વામીએ સર્વે સહયોગી સેવાધારીઓનો આભાર માન્યો હતો.

અંતમાં પૂજ્ય મહંત સ્વામીએ બળપ્રેરક ઉદ્બોધન દ્વારા જણાવ્યું હતું કે, ‘સ્વામીશ્રીએ અહીં પ્રતિષ્ઠા કરી છે તે એમનામાં અખંડ બિરાજમાન સાક્ષાત્ શ્રીજીમહારાજે જ કરી છે. વચનામૃત કહે છે તેમ, એવા મહાન સંત સ્વામીશ્રીની આંખોમાં જોનારા ભગવાન છે, તેમના પગમાં ચાલનારા ભગવાન છે. તેથી શ્રીજીમહારાજે જાતે જ પ્રતિષ્ઠા કરી છે. અહીં સ્વયંસેવકોએ જે સેવા કરી છે, સ્વામીનું સમજીને જે સમર્પણ કર્યું છે, પોતાનું સમજીને કરી છે તે બીજા કોઈ કરી શકે નહીં! બીજા કોઈ સમજી શકે પણ નહીં. તે સેવાનું વળતર ભગવાન આપશે. આવી જ રીતે બી.એ.પી.એસ. એક પરિવારની ભાવનાથી સંપ, સુહૃદભાવ, એકતાથી અક્ષરધામ મહામંદિરનું કાર્ય કરવાનું છે. અક્ષરધામની સેવાને નેશનલ પ્રોજેક્ટ બનાવીને સૌએ આ કાર્યમાં જોડાવાનું છે.’

અંતે ભગવાન સ્વામિનારાયણ અને પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના જયજયકારો સાથે સમારોહની પૂર્ણાહુતિ થઈ ત્યારે સૌ હૃદયમાં એવી એક નૂતન આશાના સૂર્યોદય સાથે વિદાય થયા કે ‘શિખરબદ્ધ મંદિરનું કાર્ય અને તેના ઉદ્ઘાટનનો અવસર આવો ભવ્ય અને અદ્વિતીય છે તો અક્ષરધામ મહામંદિરના સર્જન અને પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવનો માહોલ કેવો વિરલ, દિવ્ય અને કલ્પનાતીત હશે!’ અને એ પણ વહેલામાં વહેલી આવે એવી પ્રાર્થનાઓનો નાદ સૌનાં રોમ રોમમાં પ્રસરી રહ્યો.. ♦

વેરાનમાં મ્હોરી ઊઠી હરિયાળી : રંભાસ પછાત વિદ્યાર્થીઓની આશ્રમશાળા

Greenery flourishes in the desert : School for the underprivileged in Rambhas

દક્ષિણ ગુજરાતમાં રંભાસ ખાતે પછાત વિદ્યાર્થીઓની આશ્રમશાળા
દત્તક લઈને પ્રમુખસ્વામી મહારાજે
સેંકડો આદિવાસી વિદ્યાર્થીઓનું ભાગ્ય બનાવ્યું હરિયાળું...

‘હું જ્યારે અન્ય શાળામાં ભણતો હતો ત્યારે મને શિક્ષણ અને સત્સંગ શું છે તેની વિશેષ ખબર નહોતી. પણ જ્યારથી પ્રમુખસ્વામી મહારાજના આશીર્વાદથી સંચાલિત આ શાળામાં અભ્યાસ કરવા આવ્યો, ત્યારથી શિક્ષણ અને સત્સંગનું સાચું મૂલ્ય સમજાવા લાગ્યું અને ભણવામાં પણ પ્રગતિ સાધી શક્યો. અમે આદિવાસી છીએ તેથી દારૂ જેવાં વ્યસનો હોય જ. મારા પિતાને પણ દારૂનું વ્યસન હતું, પરંતુ આ શાળામાંથી મને સંસ્કાર મળ્યા એટલે મારા પિતાને વ્યસન છોડવાની પ્રેરણા મળી છે.’ શિક્ષણ અને સત્સંગના પવિત્ર સંસ્કારોથી મહેકી ઊઠેલો રાનપાડા ગામનો આદિવાસી વિદ્યાર્થી દાનેલ ઠાકરે આમ ઉચ્ચારતાં ખુમારીથી મલકાય છે.

ખાંભલા ગામનો જિજ્ઞેશ ચવધરી કહે છે કે, ‘પહેલાં હું અભ્યાસમાં ખૂબ જ નબળો હતો. કોઈની સાથે વાત કરવામાં પણ ખચકાટ અનુભવતો. કોઈ બે પ્રશ્ન પૂછે તો ગભરાઈ જતો. પણ બી.એ.પી.એસ.ના સંતોના આશીર્વાદથી આ શાળામાં અભ્યાસાર્થે આવ્યો અને મારું જીવન બદલાવા લાગ્યું. શાળામાંથી મળતાં સંસ્કાર, શિક્ષણ અને વિવિધ પ્રવૃત્તિઓને કારણે મારો આત્મવિશ્વાસ વધ્યો, અભ્યાસમાં પણ પ્રગતિ થઈ. જેના કારણે ધોરણ ૧૦માં હું ૭૦ ટકા સાથે ઉત્તીર્ણ થયો ત્યારે મારાં માતા-પિતા અને સમાજ સૌ કોઈ ખુશ થઈ ગયાં. હાલ ૧૧ સાયન્સમાં અભ્યાસ કરી રહ્યો છું.’

આ સ્વાનુભવો છે – ગુજરાતની દક્ષિણે સાપુતારા પર્વતમાળાની તળેટીએ પ્રાકૃતિક સૌંદર્યની વચ્ચે વસેલા રંભાસ ગામની આશ્રમશાળાના વિદ્યાર્થીઓના.

હા, આવા અનેક વનવાસી વિદ્યાર્થીઓ પોતાની સફળતાનું શ્રેય પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ અને બી.એ.પી.એસ. સંસ્થાનાં શૈક્ષણિક સેવાકાર્યોને આપી રહ્યા છે.

વાત એમ છે કે દક્ષિણ ગુજરાતના ડાંગ જિલ્લામાં આદિવાસીઓની બહુલતા છે. આ વનવાસી વિદ્યાર્થીઓના શૈક્ષણિક ઉત્કર્ષ માટે રાજ્ય સરકારે દાયકાઓ પહેલાં આશ્રમશાળાઓનો પ્રારંભ કર્યો હતો. ઉત્તમ આશયથી શરૂ કરાયેલી આ પ્રવૃત્તિના સુચારુ સંચાલન માટે સમય જતાં સક્ષમ અને નિઃસ્વાર્થ સંચાલકોની જરૂર ઊભી થઈ. ઉત્તમ સંચાલકો અને કાર્યવાહકોના અભાવે આશ્રમશાળાનું સ્તર કથળતું જતું હતું અને તેનું લક્ષ્ય સિદ્ધ નહોતું થતું. આથી, આ ક્ષેત્રના સેવાભાવી અધિકારીઓ અને સ્થાનિક સામાજિક અગ્રણીઓની નજર પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ તરફ વળી. તેમણે પ્રમુખસ્વામી મહારાજનું વિશાળ પાયે ચાલી રહેલું આદિવાસી-ઉત્કર્ષ કાર્ય નિહાળ્યું હતું. વળી, પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીના આશીર્વાદથી બી.એ.પી.એસ.ના છત્ર હેઠળ વિશાળ પાયે ચાલી રહેલી શિક્ષણસેવાઓને પણ નીરખી હતી. આથી, એ મહાનુભાવોએ પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીને એક આશ્રમશાળા દત્તક લઈને સૌને પ્રેરણા આપવા નિવેદન કર્યું હતું. પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીએ સંમતિ આપી અને ડાંગ

જિલ્લાના પછાત ગામ રંભાસ ખાતેની શાળા દત્તક લેવામાં આવી.

સન ૧૯૮૮માં સ્થપાયેલી રંભાસની આ શાળાને સન ૨૦૧૧માં દત્તક લીધા બાદ નવસારી ખાતે સેવા કરી રહેલા પૂજ્ય નરેન્દ્રપ્રસાદદાસ સ્વામી(આચાર્યસ્વામી), પૂજ્ય શ્રીજીપ્રકાશદાસ સ્વામી, પૂજ્ય મંગલનયનદાસ સ્વામી વગેરે સંતો તેમજ સંસ્થાના કાર્યકરોએ વરિષ્ઠ સંતોની આજ્ઞા અનુસાર સર્વેક્ષણ કર્યું. સૌને લાગ્યું કે આ શાળાનો કાયાકલ્પ કરવા માટે કેટલાક પાયાના ફેરફારો કરવાનું અનિવાર્ય છે. જેમાં સર્વ પ્રથમ બાબત હતી – વિદ્યાર્થીઓને મળતી સુવિધાઓની.

સૌએ નીરખ્યું કે આ નિવાસી શાળામાં બાળકોને મળતાં ભોજન અને ભોજનશાળાની દુર્દશા દયનીય હતી. વિદ્યાર્થીઓને રહેવાની વ્યવસ્થા અત્યંત વધુ દયનીય હતી. ન તેમને સૂવાની યોગ્ય વ્યવસ્થા હતી કે ન નહાવા-ધોવાની. ઉદાહરણરૂપે જુઓ બાજુની છબીઓ. એવી નાની-મોટી અનેક અસુવિધાઓને કારણે વનવાસી બાળકો વધુ પછાત બનતા જતા હતા. પરંતુ પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજની પ્રેરણાથી આ શાળા દત્તક લેવામાં આવી અને સુવિધાની દૃષ્ટિએ તેનાં રૂપરંગ બદલાઈ ગયાં. જેમ કે –

- શાળામાં એક વહીવટી ઓફિસ, એક કોમ્પ્યુટર લેબ સહિત વર્ગખંડોનું નવીનીકરણ કરવામાં આવ્યું.
- વર્ગખંડોમાં ધો. ૯, ૧૦, અને ૧૧ના વિદ્યાર્થીઓ અભ્યાસ કરે છે. હાલમાં બે નૂતન વર્ગખંડો નિર્માણધીન છે. જેમાં ધોરણ ૧૧ અને ૧૨ના વિદ્યાર્થીઓ અભ્યાસ કરશે.
- વિદ્યાર્થીઓના ભોજન માટે રસોડાની વ્યવસ્થા નહોતી તેથી વિશાળ સુસજ્જ રસોઈઘર તૈયાર કરવામાં આવ્યું. જેમાં વિદ્યાર્થીઓ માટે ફ્રિજ, પીવાના ડંડા પાણી માટે વોટરકૂલર, દરેકના અલાયદાં થાળી-વાટકા વગેરે વ્યવસ્થા કરવામાં આવી છે.
- રોજિંદા વપરાશના પાણી માટે ૧૫,૦૦૦ લિટરની ક્ષમતા ધરાવતી ટાંકી, શૌચાલયો પણ તૈયાર કરવામાં આવ્યાં.
- છાત્રાલયમાં રહેતા વિદ્યાર્થીઓ માટે સારામાં સારા નિવાસની વ્યવસ્થા, ઓછાડ સહિતનું બેડિંગ વગેરે સંસ્થા દ્વારા આપવામાં આવ્યાં.
- વિદ્યાર્થીઓને યુનિફોર્મ, પુસ્તકો વગેરેનું વિતરણ કરવામાં આવે છે.
- વિદ્યાર્થીઓને રમત-ગમતનાં સાધનો તથા પૂરતી વ્યવસ્થા આપવામાં આવી.

વ્યવસ્થાઓ અને સુવિધાઓની દૃષ્ટિએ ધરમૂળથી શાળાનાં રૂપરંગ બદલાઈ ગયાં. પરંતુ તેથીય વધુ અગત્યની બાબત હતી - વિદ્યાર્થીઓના શિક્ષણ અને સંસ્કારની.

પછાત આર્થિક સ્થિતિ અને પછાત સામાજિક વર્તુળને કારણે તમામ દૃષ્ટિએ પછાત રહી ગયેલા આ શાળાના વિદ્યાર્થીઓ માટે સૌથી વધુ અગત્યની બાબત હતી - તેમની માનસિકતા બદલવાનું કાર્ય. વિદ્યાર્થીઓ ક્યારેય બેથી વધુ પિરિયડ ભણતા નહોતા! તેમને મન આખા દિવસમાં બે પિરિયડ ભણવું તે પણ બહુ જ ભારે બોજ સમું હતું! પરંતુ ધીમે ધીમે બી.એ.પી.એસ.ના સંનિષ્ઠ શિક્ષકો અને સંતોના પ્રયાસથી બાળકો પૂર્ણ દિવસ શાળાના ભણતર માટે તૈયાર થવા લાગ્યા. શાળાના વર્ગોમાં તેમની નિયમિત હાજરી રહેવા લાગી. એકાગ્રતા અને સતર્કતાના પાઠ મળવા લાગ્યા. પરિણામે અઘરા વિષયો તેમને સરળ લાગવા માંડ્યા.

જોકે આમ થવું સહેલી બાબત નહોતી. તે માટે પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીની રુચિ અનુસાર અહીં વિદ્યાર્થીઓનું જીવન પ્રશિક્ષિત અને અનુશાસન યુક્ત બને તે જરૂરી હતું. આથી ખૂબ ચીવટપૂર્વક પ્રત્યેક વિદ્યાર્થીનો આખા દિવસનો નિર્ધારિત કાર્યક્રમ કરવામાં આવ્યો છે. પરિણામે રંગશિયા ગાડા જેવા રેઢિયાળ જીવનને બદલે સુવ્યવસ્થિત રહેણીકરણી શરૂ થઈ ગઈ.

બ્રાહ્મમુહૂર્તમાં સવારે પોણા પાંચ વાગે આશ્રમશાળાના છાત્રાલયમાં જાગૃતિનો શંખ વાગી જાય છે. એકાદ કલાકમાં સ્નાનાદિક વિધિ અને નિત્યપૂજા વગેરેથી પરવારી જઈને વિદ્યાર્થીઓ વહેલી સવારે શાંત ચિત્તે ૬:૦૦ વાગે સ્વ-અભ્યાસમાં પરોવાઈ જાય છે. ૭:૦૦ થી ૮:૩૦ દરમિયાન આરતી, અષ્ટક, સભા, અલ્પાહાર, ટુકડી સેવા કાર્ય વગેરેનો લાભ લઈને ગૃહકાર્ય કરે છે. પોણો કલાક મુક્ત વિહાર માણીને ૯:૧૫ થી ૧૦:૦૦ દરમિયાન સૌ ભોજન કરી લે છે. ૧૦:૧૫ થી ૪:૪૫ દરમિયાન શાળાનું અભ્યાસકાર્ય દોડતું રહે છે. શાળાનું અભ્યાસકાર્ય પૂર્ણ કરીને વિદ્યાર્થીઓ છાત્રાલયમાં પરત આવે અને ૬:૦૦ વાગ્યા સુધી વિવિધ રમતો રમે છે. વળી, પોણો કલાક ગૃહકાર્ય કરીને ૬:૪૫ વાગે આરતી, પ્રાર્થના વગેરેમાં સૌ જોડાય છે. ત્યારબાદ સંધ્યાસભા યોજાય છે. આ સંધ્યાસભા ઈન્ટરેક્ટિવ હોવાથી વિદ્યાર્થીઓ માટે તે ખૂબ રસપ્રદ બની રહે છે.

ત્યારબાદ ભોજન લઈને સૌ ૧૦:૩૦ સુધી વાંચનમાં પરોવાય છે. અને પછી આરામ.

આવા શિસ્તબદ્ધ અને નિયમિત વાતાવરણમાં રહેવાથી વિદ્યાર્થીઓમાં આમૂલ પરિવર્તન આવ્યું. અને તેની સીધી અસર

વિદ્યાર્થીઓના પરિણામ પર પડવા લાગી. અત્યારે અહીં નિવાસી વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા ૧૩૭ છે. શાળાના કુલ વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા ૨૨૦ છે. સન ૨૦૧૧ પહેલાં આ વિદ્યાર્થીઓનું સરેરાશ પરિણામ ૨૦ ટકાથી નીચે આવતું હતું. પણ માત્ર એક જ વર્ષમાં આ શાળાનું પરિણામ ૭૦ ટકાથી વધુ આવવા લાગ્યું છે !

વિના મૂલ્યે અભ્યાસ કરતા આ વિદ્યાર્થીઓને વિશેષ પ્રોત્સાહિત કરવા શિષ્યવૃત્તિ પણ આપવામાં આવે છે.

પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના આશીર્વાદથી વિદ્યાર્થીઓના શિક્ષણનું સ્તર તો ઘણું ઊંચું આવી ગયું, પરંતુ સ્વામીશ્રીનું લક્ષ્ય સંસ્કાર અને અન્ય કૌશલ્યમાં પણ તેમનું સ્તર ઊંચું આવે તે રહ્યું છે. તે માટે સંસ્થાના સંતો તેમજ કાર્યકરો સતત પ્રવૃત્ત રહે છે. પ્રત્યેક વિદ્યાર્થીને અહીં પોતીકું ઘર લાગે એવી આત્મીય હૂંફ આપીને તેના વ્યક્તિત્વ-વિકાસમાં પણ અહીં અંગત રસ લેવામાં આવે છે. આધુનિકતમ માધ્યમોનો સમન્વય કરીને બાળકોને ઉચ્ચ લક્ષ્ય માટે પ્રતિબદ્ધ કરવામાં આવે છે.

એક સમયે અહીં અભ્યાસ કરતા વનવાસી બાળકો નિયમિત નહાવા-ધોવા જેવી સામાન્ય બાબતમાં પણ અજ્ઞાન દશામાં હતા, તો પછી ઉચ્ચ સંસ્કારોની અપેક્ષા કેવી રીતે રાખી શકાય ? પરંતુ એ પડકાર ઝીલી લઈને બી.એ.પી.એસ. દ્વારા અહીં દિવસ-રાત સંસ્કારની ધૂણી ધખાવવામાં આવી અને માત્ર બે-ત્રણ વર્ષમાં જ વિદ્યાર્થીઓ શિક્ષણની જેમ સંસ્કારમાં અન્ય શાળાના વિદ્યાર્થીઓની સરખામણીમાં ખૂબ આગળ નીકળી ગયા. જેમને જાજરૂ જવાનું પણ ભાન નહોતું એવા વિદ્યાર્થીઓ અત્યારે પવિત્ર જીવન જીવતા થયા છે. તેઓ નિયમિત તિલકચાંદલા સહિત નિત્યપૂજા કરતા થયા છે. શ્રદ્ધા અને ભક્તિથી તેમના ચહેરા પરની જાણે રોનક બદલાઈ ગઈ છે. આ વિદ્યાર્થીઓએ પોતાના ઘર-પરિવારમાં પણ સત્સંગનો રંગ લગાડ્યો છે.

શાળાના એક વિદ્યાર્થી ભાવેશ રાઉત ભાવોર્મિઓ વ્યક્ત કરતાં કહે છે, ‘આ શાળા દ્વારા મારામાં સંસ્કાર અને શિક્ષણનું સિંચન થયું છે, તેથી મારું જીવન તો સુધર્યું છે, પરંતુ મારા પિતાનું પણ દારૂનું જૂનું વ્યસન છૂટ્યું છે. આ શાળામાં અભ્યાસ કરવાથી અમારું ભવિષ્ય ઉજ્જવળ બની રહ્યું છે તે અમને સ્પષ્ટ દેખાય છે.’

સંસ્કારયુક્ત શિક્ષણથી અલંકૃત થયેલા આ વિદ્યાર્થીઓ અન્ય વિદ્યાર્થીઓની સરખામણીએ સંસ્કાર, શિક્ષણ અને શિસ્તમાં મુઠ્ઠી ઊંચેરા સાબિત થાય તેમાં કોઈ અતિશયોક્તિ નથી.

સંસ્કારોની સાથે વિદ્યાર્થીઓના વ્યક્તિત્વ વિકાસ માટે શાળામાં નિયમિત વિવિધ કાર્યક્રમો યોજાય છે. નિયમિત યોજાતી પ્રાર્થનાસભા અને રવિ સત્સંગસભામાં વિદ્યાર્થીઓ પ્રવચનો-પ્રસંગકથનો કરે છે, ગ્રૂપચર્ચા દ્વારા બાળકો અરસ-પરસ સામાન્યજ્ઞાન અને અભ્યાસલક્ષી પ્રશ્નોત્તર કરે છે. સમયાંતરે સમૂહપૂજા જેવા કાર્યક્રમો યોજાય છે. વળી, સંતો અને કાર્યકરો દ્વારા પણ બાળકોને સતત પ્રોત્સાહન ભર્યા પ્રેરક પ્રવચનો પીરસવામાં આવે છે. તેનાથી વિદ્યાર્થીઓ પોતાનો આત્મવિશ્વાસ દૃઢ કરીને અભ્યાસમાં આગળ વધ્યા છે અને સંસ્કારોથી પણ મહેકી ઊઠ્યા છે.

પ્રતિવર્ષ યોજાતા શાળાના વાર્ષિકોત્સવમાં વિદ્યાર્થીઓ વિવિધ સાંસ્કૃતિક કૃતિઓ રજૂ કરીને વિવિધ કળા-કૌશલ્ય ખીલવે છે. પરિણામે જે વિદ્યાર્થીઓ પહેલાં પોતાનું નામ બોલવામાં પણ ખચકાટ અનુભવતા હતા તેઓ હવે ભરપૂર આત્મવિશ્વાસથી છલકાતા થયા છે. સન ૨૦૧૩માં વઘઈ ખાતે નરેન્દ્રભાઈ મોદીની ઉપસ્થિતિમાં ૧૦,૦૦૦ની જનમેદની વચ્ચે આ શાળાના વિદ્યાર્થી જિજ્ઞેશે ‘ભારતીય સંસ્કૃતિનો ભવ્ય વારસો’ વિષયક વક્તવ્ય રજૂ કરીને સૌને મંત્રમુગ્ધ કરી દીધા હતા. આ ઉપરાંત શાળાના અન્ય વિદ્યાર્થીઓએ ‘હે માતૃભૂમિ ભારત, તુજ પદ વંદના’ નૃત્ય પણ રજૂ કર્યું હતું.

શાળામાં યોજાતી વિવિધ રમત-ગમતની પ્રવૃત્તિઓ દ્વારા કેટલાય વિદ્યાર્થીઓએ તે ક્ષેત્રમાં વિશેષ પ્રગતિ સાધી છે. જેમાં હેમરાજ ગાવિત નામનો વિદ્યાર્થી ‘ખો-ખો’ રમત સ્પર્ધામાં જિલ્લા કક્ષાએ પસંદગી પામ્યો છે. રાજ્ય કક્ષાની કબડ્ડી સ્પર્ધામાં શાળાની વિદ્યાર્થીનીઓ પ્રેમીલા અને હેમુ ચૌધરીએ પસંદગી પામીને શાળાનું વિશેષ ગૌરવ વધાર્યું છે.

વિદ્યાર્થીઓના વાલીઓ માટે પણ વર્ષમાં છ જેટલા વાલી સંમેલનો યોજાય છે. જેમાં સંતોનાં વક્તવ્યો તથા બી.એ.પી.એસ. સંસ્થા દ્વારા આયોજિત ‘વાલી જાગૃતિ અભિયાન’ દ્વારા વિશેષ પ્રેરણા આપવામાં આવે છે.

બી.એ.પી.એસ. સંસ્થાનાં આ રચનાત્મક કાર્યોથી વાલીઓ ખૂબ પ્રભાવિત થાય છે. આશરે ૪૦ કિ.મી.ના અંતરાલમાં વસતાં ૪૫ ગામોના વિદ્યાર્થીઓ હવે શાળામાં અભ્યાસાર્થે આવે છે. અહીં વાલીઓને પોતાના બાળકોનો વિકાસ જોઈને પૂર્ણ સંતોષ છે.

રમણભાઈ ચવધરી પોતાના પુત્ર જિજ્ઞેશની પ્રગતિ જોઈને જણાવે છે કે, ‘મારો પુત્ર અહીં સંસ્કાર અને શિક્ષણથી ઘડાયો છે. પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ તેમના સંતો અને શાળાના શિક્ષકોનો હું જેટલો આભાર વ્યક્ત કરું એટલો ઓછો છે.’

જ્યારે જ્યારે શાળાની મુલાકાતે અગ્રણીઓ, સમાજસેવકો આવે છે ત્યારે તેમને અહીંના કાર્યને જોઈને પૂર્ણ સંતોષ થાય છે.

ડાંગ ક્ષેત્રના પૂર્વ ધારાસભ્ય શ્રી વિજયભાઈ પટેલે જણાવ્યું હતું કે, ‘વર્ષોથી વનવાસીઓના બાળકોને અભ્યાસ અને સંસ્કારોની સાચી રીત આપવાનું કાર્ય કરવાનું અમે ઈચ્છતા હતા તે કાર્ય આ બી.એ.પી.એસ. સંસ્થા દ્વારા થઈ રહ્યું છે, જેનો મને આનંદ છે.’ ધારાસભ્ય શ્રી મંગળભાઈ ગાવિત સહિત ગામના સરપંચ અને અન્ય સામાજિક અગ્રણીઓ બોલી ઊઠ્યા કે, ‘આપણા વનવાસી બાળકોનું ભવિષ્ય હવે ઉજ્જવળ દેખાય છે. પ્રમુખસ્વામી મહારાજના આશીર્વાદ મળ્યા છે એટલે હવે, આપણા બાળકો આ સંસ્થા દ્વારા ચાલતી શાળામાં અભ્યાસ કરીને ઉજ્જવળ કારકિર્દીના બળે ખૂબ આગળ વધશે, તેવો વિશ્વાસ જાગે છે.’

પ્રમુખસ્વામી મહારાજના આશીર્વાદથી આ શાળામાં અભ્યાસ કરતા સેંકડો વનવાસી વિદ્યાર્થીઓ ભવિષ્યમાં વધુ ઉચ્ચ સફળતાનાં શિખરો સર કરશે જ, એવા વિશ્વાસ વચ્ચે હવે અહીં વાલીઓનો ધસારો વધવા લાગ્યો છે. જ્ઞાનસેવા ચેરિટેબલ ટ્રસ્ટ ઋષિપુત્રો સમા વનવાસી બાળકોની આ શિક્ષણ સેવાઓને હજુ વધુ ક્ષિતિજોમાં વિસ્તારવા ઝંખે છે.

(માહિતીસ્ત્રોત : મંગલનયનદાસ સ્વામી, દર્શનસિંહ પરમાર, ધર્મશભાઈ સોલંકી) ♦